खेमराज भाई की डायरी

SRUTI
Society for Rural, Urban and Tribal Initiative

खेमराज भाई की डायरी

संपादन

महिपाल सिंह (मोहन)

SRUTI
Society for Rural, Urban and Tribal Initiative

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

प्रकाशक

SRUTI
Society for Rural, Urban and Tribal Initiative
Q-1 हौज़ ख़ास एन्क्लेव,
नई दिल्ली-110 016
फोन : +91 -11 26964946, 26569023
www : www.sruti.org.in, www.manthan-india.org
e-mail : core@sruti.org.in

सहयोग राशि : 100.00 रुपये

आवरण चित्र
रोहित जैन

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

सामाजिक सरोकारों का जीवंत दस्तावेज़- खेमराज चौधरी की फेसबुक वाल की टिप्पणियाँ

खेमराज चौधरी देश में जन आंदोलनों के क्षेत्र में इतना जाना-पहचाना नाम है कि वो कहीं रहें, उनके किस्से हर किसी के पास हैं। उनके बचपन के साल छोड़ दिये जाएँ तो खेमराज भाई को लेकर जिसके पास भी स्मृतियाँ होंगीं वो उनके कर्मठ, जुझारू और कमजोर काया के बावजूद अडिग इरादों से बने एक इंसान की ही होंगीं, क्योंकि जिस किसी ने उन्हें जिस भी उम्र में देखा हमेशा सत्ता से लड़ते हुए देखा। वो सत्ता चाहे सामाजिक हो, राजनैतिक हो, सांस्कृतिक हो या आर्थिक हो, खेमराज भाई को हमेशा शोषितों, वंचितों और कमज़ोरों के पक्ष में खड़ा देखा। एक बेहतरीन संगठनकर्ता के रूप में खेमराज भाई की प्रतिष्ठा झाबुआ के सुदूर जंगलों में आदिवासियों को उनके सांवैधानिक हक़-हुकूकों के लिए लामबंद करने और शोषक वर्ग से लोहा लेने के लिए गठित किए गए खेडुत मजदूर चेतना संगठन से शुरू होती है। हालांकि सामाजिक कामों में उनकी भूमिका कि शुरूआत राजस्थान में हुई पर अपनी यायावरी ज़िंदगी जीने के लिए मशहूर खेमराज भाई का असली ठौर झाबुआ ही बना।

झाबुआ में राजनैतिक चेतना का व्यापक प्रसार और जन शिक्षण करने के बाद वो अपने प्रांत में लौटे और भदेसर (चित्तौड़गढ़) को अपना ठिकाना बनाया। यहाँ भी भील समुदाय के बीच राजनैतिक लामबंदी की प्रक्रिया में ही उन्हें मुब्तिला पाया।

जीवन के उत्तर्राद्ध में यानी ज़िंदगी की दूसरी पारी में खेमराज भाई ने खाट आंदोलन खड़ा करके सामाजिक वर्चस्व को जिस प्रकार चुनौती दी है वो रचनात्मक प्रतिरोध के तौर पर न केवल राजस्थान के सामंती परिवेश में जन-जुबान पर है, बल्कि पूरे देश में भेदभाव के खिलाफ हुए आंदोलनों की

फेहरिस्त में चुनिन्दा आंदोलनों में शुमार है।

आज की युवा पीढ़ी जिस तरह से 'स्व' के बोध और गरिमा के समाजार्थिक संदर्भों से कटी या बाज़ार की प्रभुत्वशाली व्यवस्था ने उन्हें दूसरे तमाम प्रलोभनों के मार्फत भटकाया उससे प्राकृतिक रूप से सामाजिक आंदोलनों की व्यापक परंपरा को कुछ समय के लिए धक्का तो लगा ही साथ ही युवाओं की उदासीनता ने एक ऐसी सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था भी रची जिसका असर बहुत जल्दी लोगों की विशेष रूप से हाशिये पर धकेले गए लोगों की ज़िंदगी पर दिखने लगे।

खेमराज भाई द्वारा उनके फेसबुक पर की गई ये छोटी-छोटी टिप्पणियाँ अपने समय की वृहत कहानियों का कोलाज हैं। इनसे होकर गुजरना न केवल राजस्थान के ग्रामीण परिवेश को करीब से समझना है बल्कि एक कल्याणकारी राज्य की ध्वस्त होती छवि को देखना भी है। यह टिप्पणियाँ एक स्तर पर बहुत मार्मिक हैं कि शाइनिंग इंडिया में ऐसे भी लोग हैं जिन्हें केवल किसी तरह जीने के लिए ज़रूरी साधन मुहैया नहीं हैं। खेमराज भाई की इन टिप्पणियों का यह संकलन हमें उस भारत की तस्वीर दिखाता है जो प्रायः हमारी नज़रों से ओझल रह जाती हैं। शुष्क और नीरस आंकड़ों से केवल यह बताना कि देश में गरीबी है और आय के आधार पर असमानता की गहरी और बहुत चौड़ी खाई दो वर्गों के बीच में आती गयी है, काफी नहीं है। इस गरीबी की तीव्रता का सही आंकलन इन टिप्पणियों और इनके साथ लगीं तस्वीरों से ही किया जा सकता है।

इस संकलन के मार्फत हमें एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर खेमराज भाई के सरोकारों की दुनिया का भी पता मिलता है। ऐसे कई फेसबुक पोस्ट्स हैं, जिनमें उन्होंने अपने बचपन के दोस्तों की आज की हालत के संदर्भों में भी लिखा है। कुछ पोस्ट्स ऐसे भी हैं जिनमें ऐसे लोगों का हवाला दिया गया है, जो अपने जीवन के अंतिम क्षणों में एक बार खेमराज भाई को देख लेना चाहते हैं क्योंकि यही एक व्यक्ति उन्हें पूरी दुनिया में अपना लगता है।

फेसबुक जैसे सोशल मीडिया को वाकई संदेश का सार्थक और वैकल्पिक माध्यम बनाया जा सकता है, यह भी इन टिप्पणियों को देखकर

यकीन में बदला जा सकता है। यह बात फिर सही साबित होती है कि किसी भी माध्यम की सार्थकता इस बात पर निर्भर होती है कि उसका इस्तेमाल कौन कर रहा है।

इस संकलन और फेसबुक टिप्पणियों को एक किताब के रूप में लाने का एक बड़ा उद्देश्य, खेमराज भाई की आँखों और तजुर्बों से हमारे समाज के अंतिम व्यक्तियों की ज़िंदगियों का जीवंत दस्तावेजीकरण किया जा सके। फेसबुक जैसे माध्यमों पर समय-समय पर की गई टिप्पणियों को थोड़ा स्थायी दस्तावेज़ बनाया जा सके और सबसे महत्वपूर्ण इस दस्तावेज़ के माध्यम से हमारे सामने हमारे समाज के सबसे पीड़ित, लाचार और बेबस ज़िंदगियों की उपस्थिति दिखती रहे ताकि, इस समाज-व्यवस्था को बदलना क्यों ज़रूरी है? का एहसास हमें हर वक़्त बना रहे।

इन टिप्पणियों का संकलन करने के लिए महिपाल सिंह (मोहन) को बहुत बहुत शुक्रिया और जिस तन्मयता व रचनात्मकता के साथ मोहन ने इस काम को अंजाम तक पहुंचाया उसके लिए उन्हें बधाई। श्री सुधीर वत्स (अनुज्ञा बुक्स) का शुक्रिया।

हम उम्मीद करते हैं कि यह दस्तावेज़ हमें अपने अपने सामाजिक दायित्वों की याद दिलाता रहेगा।

सत्यम व श्वेता
श्रुति

सम्पादन व संकलनकर्त्ता की ओर से

खेमराज चौधरी जो किसी भी परिचय के मोहताज नहीं है। खेमराज भाई का नाम तो 14-15 साल पहले से सुना लेकिन उनको करीब से जानने का मौका पिछले 7-8 साल में मिला, उनके जीवन के संघर्ष की कहानियां बहुत सुनीं। हमेशा से ही गरीब और शोषित वर्ग के लिये हर लड़ाई में खड़ा पाया, समाज के लिये लड़ते-लड़ते आज वो खुद की जिंदगी की भी लड़ाई लड़ रहे हैं।

कैंसर जैसे रोग के बावजूद वो लोगों की मदद करना नहीं भूलते, आज भी हर रोज ठीक उसी तरह निकल पड़ते हैं, जिस तरह क्रिसमस के दिन सेंटा क्लोज़ निकलता है अपनी पोटली के साथ, ठीक उसी तरह इन सभी लोगों को खेमराज जी का इंतजार रहता, सेंटा के आने की खुशी तो एक दिन की होती है लेकिन इनके आने की हमेशा ही खुशी रहती है, आज भी उनके गांवों में जाने से किसी न किसी को एक नई जिंदगी मिलती है, उम्र में चाहे बड़ा हो या छोटा, वो हर किसी को बिना 'जी' के संबोधित नहीं करते, बच्चों के साथ किस तरह एकदम बच्चे बन जाते हैं, ये देखने लायक है। खेमराज भाई ने अपना पूरा जीवन उन लोगों के नाम समर्पित कर दिया जो आज भी समाज की तथाकथित मुख्यधारा से कोसों दूर हैं। लोगों को अपने जीवन का एक-एक पल दिया और दे रहे हैं। मैं पिछले कई सालों से उनके साथ जुड़ा हूँ, जिस तरह आज सोशल मीडिया का लोग दुरुपयोग करते हैं, ठीक उसके उलट खेमराज जी ने इसका सदुपयोग किया है। उनकी एक-एक पोस्ट से हर किसी की ज़िंदगी जुड़ी हुई है, आज लोग किसी को थोड़ी भी मदद करते हैं तो उसे इस तरह दिखाते हैं, जैसे दुनिया के सब से बड़े दानवीर हों, लेकिन खेमराज जी ने कभी अपने आप को इस तरह पेश नहीं किया, हमेशा पीछे से काम किया, जिससे मुझे इन कहानियों को संकलन का रूप देने के लिये प्रेरणा मिली, उनकी एक-एक कहानी हमको उस भारत की

तस्वीर दिखाती है जो इस भारत की हक़ीक़त है। आज़ादी के 72 वर्ष बीतने के बाद भी हम आज कहाँ है? ये देखने और सोचने को मजबूर करती हैं कि आज भी हमारे देश में जो काम हमारे देश की सरकारों को करना चाहिए वो नहीं कर रही हैं, विकास शब्द केवल आंकड़ों में दिखाने के लिये ही हैं। खेमराज भाई की भाषा एकदम सरल और बेबाक है। भील समुदाय के संघर्षों को जिस तरह उन्होंने देखा, समझा और महसूस किया वो हम सभी को इन छोटी-छोटी कहानियों में देखने और समझने को मिलेगा। इन सभी कहानियों में हमने केवल थोड़ा-बहुत शब्दों को ठीक किया है, बाकी सब उनकी ही भाषा में है। उम्मीद है कि ये किताब हमें असल भारत की असल तस्वीर को समझने में मदद करेगी।

महिपाल सिंह (मोहन)
श्रुति

खेमराज भाई का परिचय

The true revolutionary is guided by a
great feeling of love.
It is impossible to think of a genuine
revolutionary lacking this quality.

– Che Guevara

1982। शायद जनवरी या फरवरी। कदमपुरा गांव। सिलोरा ब्लॉक। किशनगढ़ तहसील। जिला अजमेर। राजस्थान। SWRC (अब बेयरफुट कॉलेज) का फील्ट सेंटर।

क्रांति और क्रांतिकारिता का पहला चेहरा, मेरे जीवन में, खेमराज का ही था। बाइस साल की उम्र में, खेमराज ही मेरे लिये स्पार्टाकस था और वो ही चे गुवेरा। खेमराज जो 300 रु. तनख्वाह का अधिकांश हिस्सा पार्टी को चंदा दे देता था।

खेमराज जो पाउडर भरने वाली बंदूक लेकर ट्रैक्टर पर रात भर घूमा, खरगोश मारने के लिये, क्योंकि अमित को खरगोश का मांस खिलाना था। फील्ड सेंटर प्रमुख होने के बावजूद घण्टों तक सहकर्मियों के साथ हंसी ठठ्ठा कर लेता था।

खेमराज जो लठ्ठ लेकर राजपूतों से अड़ जाता था, क्योंकि उन्होंने दलितों के लिये लगाये गए हैण्डपम्प पर कब्जा कर लिया था।

खेमराज जो किसी अनजान घर में नाक बहते, मिट्टी में लतपथ, नंगे, रोते हुए बच्चे को गोदी में उठाकर, नाक पोंछ कर उसे नहला देता था।

खेमराज, जो आदिवासियों के हकों के लिये लड़ते हुए अनेकों बार पीटा गया–कभी सरकारी कर्मचारियों से तो कभी गांव के दबंगों से। इसी कारण झूठे मुकदमों से भी जूझता रहा। कई बार मरते मरते बचा।

खेमराज जो बड़े बड़े बुद्विजीवियों या अधिकारियों के लम्बे बखानों के बाद कुछ बुनियादी सवाल खड़े करके उन्हे क्लीन बोल्ड कर देता था।

खेमराज, जिसमें किसी भी नई जगह जाकर लोगों को शोषण के खिलाफ लड़ने के लिये लामबंद करने की क्षमता है। झाबुआ में अस्सी के दशक में, उत्तर भारत में, जन संगठन नाम की राजनैतिक इकाई को शुरू करने वाले वे पहले व्यक्तियों में से थे। आदिवासी संगठन – खेडुत मजदूर चेतना संगठन को शुरू करने में उनकी अहम् भूमिका थी। बाद में राजस्थान में जंगल संघर्ष समिति, आदिवासी भील परिषद व खेतिहर खान मजदूर संगठन बनाये जिसके तहत सैंकड़ों बंधुआ मजदूर मुक्त हुए, जंगल के हक मिले व उच्च जातियों द्वारा भीलों के शोषण के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। इसमें खाट आंदोलन बहुत मशहूर हुआ।

खेमराज .... और बहुत कुछ।

खेमराज के चरित्र के दो पहलू हैं – जबरदस्त संघर्षशीलता और उतनी ही तीव्र करुणा।

खेमराज ने क्रांति का पाठ किताबों से नहीं, अपने संघर्षमय जीवन से सीखा। बचपन बेहद गरीबी में बीतने के बावजूद किसी तरह स्नातक तक पढ़ाई कर ली। इसीलिये इन्होंने शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के साथ-साथ मानवीयता से प्रेरित होकर गरीब लोगों के कष्ट दूर करने के लिये राहत के कामों को भी पूरे मन से किया।

खेमराज, कार्यकर्ताओं के लिये एक प्रेरणा का स्रोत है। अभी कर्क रोग से ग्रसित होते हुए, कीमोथेरेपी के बीच भी गांवों में घूमकर, गरीब से गरीब लोगों के साथ अपनत्व का रिश्ता बनाने में लगे हैं।

मेरा सौभाग्य रहा है कि मैं उनके साथ आलीराजपुर जिले के (जो उस समय झाबुआ जिले में सम्मिलित था) आदिवासी गांवों में करीब दस साल रहा और उनके मार्गदर्शन में लोगों को संगठित करने और हकों के लिये सरकार से टक्कर लेने के गुर सीखे।

– अमित

अक्टूबर 26, 2017

जिस गांव की कहानी मैं आपको बताने वाला हूँ, उस गांव का नाम सूतारीखेड़ा है। कुल 50 घरों की आबादी वाला गांव है, 5 घर सूतारों के बाकी 45 घर भीलों है। इस गांव में ना तो स्कूल है, ना ही आँगनवाड़ी है। आज जब मीटिंग कर रहे थे, तो पूछा कितने बच्चे स्कूल जाते हैं? तो बताया कि एक भी बच्चा स्कूल नहीं जाता है।

जब मीटिंग के दौरान बीस-बाईस औरतों ने शिरकत की तो मैंने देखा हर एक के चेहरे पर बड़े-बड़े दागनुमा धब्बे हैं। मैंने पूछा यह निशान क्यों है? तो बोले की हमें खाने को नहीं मिलता, सिर्फ रोटी खाते हैं, सब्जी कभी-कभार बनती है, बाकी मिर्च है तो रोटी नहीं, रोटी है तो सब्जी नहीं, सब्जी है तो नमक-मिर्च-मसाले नहीं, क्या होगा इस जाति का? पूरी की पूरी जाति भुखमरी के कगार पर है। इस हिसाब से तो पूरी जाति के लोगों को 35 किलो अनाज मिलना चाहिये, पर ऐसा नहीं है और टीबी की बीमारी भी इसी जाति में है। मेरा यहां लिखने का मकसद यह है कि हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति सरकार को लिखे और इस जाति को विलुप्त होने से बचाने का प्रयास करे।

नवम्बर 9

यह बगदी बाई भील है, गांव नेडिया ग्राम पंचायत भालून्डी इनके पति को मरे आठ साल हो गये हैं।

जब मैं इनके घर गया तो यह उड़द की दाल बना रही थी, मैंने पूछा कि दाल कहाँ से लेकर आई हो, तो बोली नाथो के घर से। मैंने पूछा कि अनाज का क्या हाल है? तो रूआसा होकर बोली कि बुरा हाल है। राशन का मिलता है, उससे काम चलाती हूँ। बरसात के दिनों बहुत बार भूखा ही सोना पड़ता है, क्यूँकि मजदूरी नहीं होती है।

मैंने घर में बर्तन की तलाशी ली तो सब खाली पड़े थे, बहुत बार राशन का गेहूं लाने का भी रूपैया नहीं होता है। इसकी जमीन कालबेलिया ने छीन ली, बकरी भी नहीं है। गुजारा बहुत मुश्किल से होता है।

नवम्बर 15

तुलसी बाई 76 की होने के बावजूद भी मजदूरी करती है, बोलती है नहीं करूँगी तो खाऊंगी क्या? मैंने कहा की नीरज भाई ने आपकी मदद करने का जिम्मा लिया है। बोली पता नहीं आने वाले दिन कैसे निकलेंगे?

नवम्बर 28

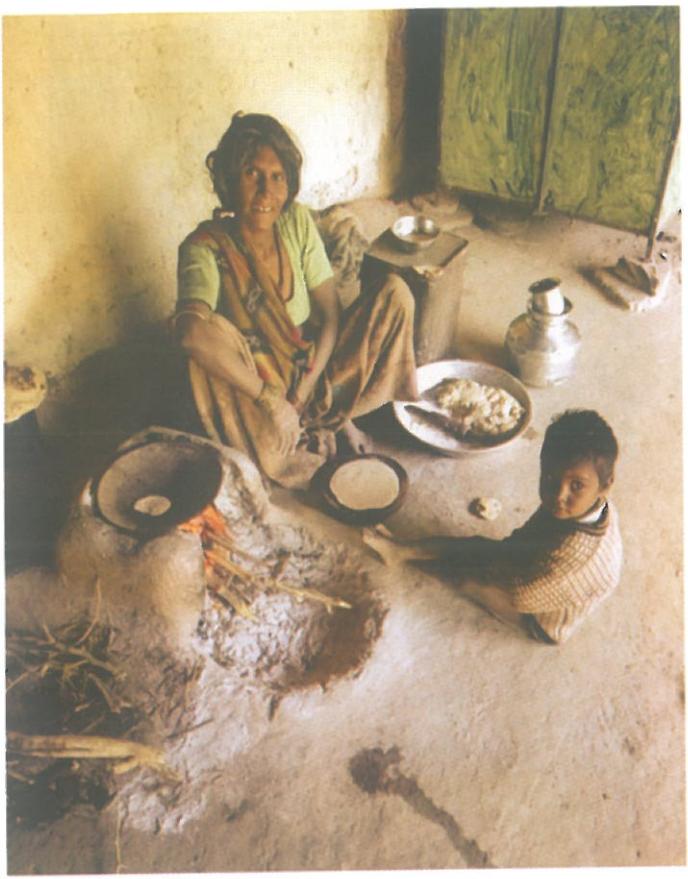

हिरी भील गांव भेरूखेड़ा, पंचायत नाहरगढ़ इसके छः बच्चे हो गये है। मैंने पूछा कि बच्चा पैदा होने पर क्या खाती हो?, तो बोली आधा किलो मीठा तेल और कुछ नहीं। फिर बोली तीन दिन के बाद खेत में जाना शुरू कर देते हैं। मैं आपको सकली भील गांव उमराली की बात बताता हूँ, उसका 11 बजे सुबह बच्चा पैदा हुआ और हमारे घर की छत पर केलू डालना था, बादल भयंकर गर्जना करने लगे तो चैना अजनारिया ने कहा कि बहू जल्दी आओ। तो वह तुरन्त पेट पर पट्टी बान्ध कर पच्चास किलो का टोबला उठाकर चलने

लगी। मेरी आँखें फटी की फटी रह गई।

मैंने बहुत सारी औरतों को देखा है, बच्चा पैदा होने के दूसरे दिन ही मजदूरी करने जाते हुए।

दिसंबर 1, 2017

जब गांव में जाते है तो ज्यादातर मलिन बस्ती में ही जाना होता है। जब घर जाते हैं तो घर के सामान से ही पता चल जाता है कि घर की माली हालत कैसी है।

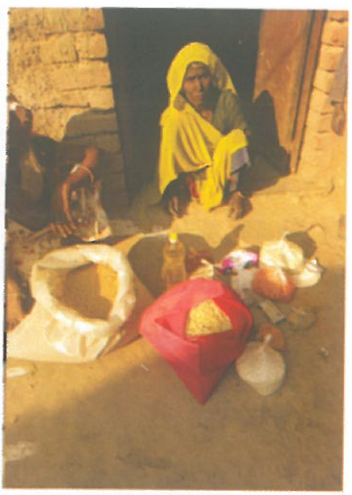

उनको पूछते कि घर कौन चलाता है, घर में कमाने वाला कौन है? फिर वो खुलने लगती और कहती है कि एक लड़का है। वो भी शराबी निकल गया, जमीन सब गिरवी रख दी है, ऊपर से बहुत सारा कर्जा हो गया है। कई दिन तो चूल्हा भी नहीं जलता है। फिर सरकारी योजना के बारे पूछते कि अनाज का राशन मिलता है? बोलती नहीं मिलता, कोई कहती अंगूठा मेल नहीं खा रहा है। कोई इतनी बूढ़ी होती कि मजदूरी भी नहीं मिलती। फिर मैंने सोचा क्यों न इनकी भूखमरी पर फेसबुक में एक पोस्ट डाली जावे कि आज फला के घर में खाने के लिए एक दाना भी नहीं है।

यह सब पढ़कर कुछ भले मानवों के दिल पसीज जाते हैं और कहते

हैं कि कुछ रुपयों की मदद करना चाहता हूँ, मैं बोलता हूँ कि आप कितनी महिलाओं को सपोर्ट करना चाहते? इतने महीने जिन व्यक्तियों ने आर्थिक मदद की उनके नाम यह है–

1. नीरज जी शर्मा, (हाल फिलहाल अमरीका)
2. रंजना, दिल्ली, प्रेम जी फाउन्डेशन
3. सुधाजी, दिल्ली
4. गोपाल जी
5. जज सहिबा डीशा, गुजरात
6. अभिषेक जी (फिलहाल इंग्लैंड)

दिसंबर 3

कम्मा भूआ निवासी भदेसर, इनका पति मरे 40 साल हो गये है। यह अपने भाई के घर में रहती है, नरेगा में जाने के लिये मुझे हुकम साब कह रही थी, कि मुझे काम दिलवा दो, वरना मैं क्या खाउँगी। सरकार तो मुझे पांच सौ रुपया और पांच किलो गेहूँ देती है, उससे मेरा काम चलता नहीं।

मैंने कहा कि आपके लिये खाने का समान देवे तो आप लेना चाहोगे कि नहीं, तो बोली आज के जमाने में घर में भूखे बैठे रहे तो कोई नहीं पूछता है। अगर मुझे सामान दोगे तो बहुत खुशी से ले लूंगी। जब सामान देकर मैं विदा लेने लगा तो आशीर्वाद की झड़ी लगा दी। अल्ला माया आप को बहुत खुश रखे, फिर मैंने उनको तफसील से बताया कि यह समान मैं अपने घर से नहीं दे रहा हूँ, यह सब सामग्री अभिषेक जी जयपुर वालों की तरफ से है, दस परिवारों को दस हजार का खाने-पीने का सामान खरीद कर देना है। मैं तो केवल माध्यम हूँ, देने वाले कोई और है। 15 किलो गेहूँ 10 किलो मक्का बाकी तेल-दाल खाना बनाने के लिये जो भी आवश्यकता थी।

दिसंबर 10

नाथू भील, गांव भीलों का खेड़ा, उसके पास अपनी जीविका चलाने का एक मात्र सहारा यह तीन बकरियाँ हैं और एक बीघा जमीन में जो भी निकलता, उसी से गाड़ी चलती है। यह है भीलों की दशा।

दिसंबर 12

आज फिर चौपाखेड़ी गांव में कपड़े बांटने गया, कपड़े का रोड पर ढेर लगाकर, घरों में जाकर आवाज लगाई, कि जिसके पास कपड़े नहीं हो वो आकर एक ड्रेस कपड़े छांट ले। देखते ही देखते 28 महिला-पुरुष की भीड़ जुट गई, और पांच मिनिट में सब लेकर चले गए। मैं इन कपड़ों के लिए जयपुर की अरमान संस्था टीम को ढेर सारी शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ जो इस सर्दी के मौसम में कपड़े दिये।

अगर कोई समूह और कपड़े देना चाहे तो हमारे यहां भिजवा सकते हैं।

दिसंबर 12

आज आधे से ज्यादा कपड़े भीलोकाखेड़ा, उदपुरा, अचलपुरा, अमरपुरा, लदेर, इन सब गांव में बांट दिये है। बाकी बचे कपड़े आधारशिला स्कूल की लड़कियों वास्ते रख लिया है। जिनको काट-छांट कर पहनाते रहेंगे, इतने गांवों में कपड़े देने के लिए अरमान संस्था जयपुर वालों के हम सब बहुत आभारी है।

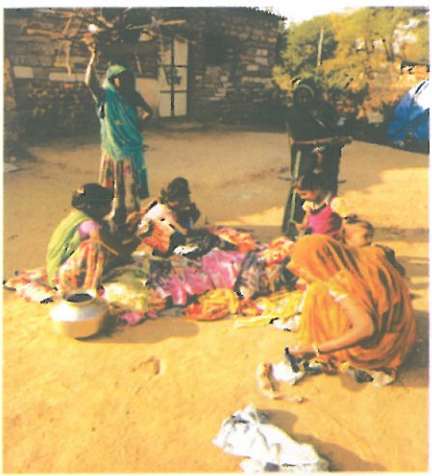

दिसंबर 20

आज दिल्ली से 12 बजे गांव पहुँचकर चार गांव में सर्दी से बचाव के लिए नीनाजी दिल्ली वालों ने जो सौ कम्बल गरीबों में बांटने के लिए दी है। मैं यही प्रयास करूंगा कि एक हफ्ते में सब लोगों के पास यह कम्बलें पहुँच जावे।

हमने जिनको कम्बल वितरण किया, उनको चुनने का यह मापदंड रखा कि पहले उनके घर में घुस कर ओढ़ने का सामान देखना, दूसरा विधवा और तीसरा अपंग, उनके घर कोई कमाने वाला नहीं है। चौथा ज्यादातर बूढ़े, भूमिहीन पांचवां। यह सब आदिवासी भील समूह से ही आते हैं। सब महिलाएं मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद बोल रही थी, मैंने बोला यह मैं अपने घर से नहीं दे रहा हूँ। दिल्ली की नीना वर्मा जी ने सौ कम्बल बांटने के लिए हमें दिया, हम तो माध्यम मात्र है।

दिसंबर 21

आज सुबह जल्दी मोटर बाईक लेकर भीलों का खेड़ी व देवडा पीपली गांव की बेसहारा, जो ठंड का मुकाबला करने में असहाय महसूस करती या करते हैं, उनको दिल्ली की नीना जी द्वारा भेंट की गई कम्बले बांटकर आया। जिस समय उनको कम्बलें वितरण कर रहा था, उनके चेहरे पर एक ही खुशी दिखाई दे रही थी कि अब हमारी रात अच्छी निकलेगी, वरना रात तीन बजे उठकर अलाव जलाना पड़ता था। अब उससे निजात मिलेगी उस दानवीर महिला को मैं अपनी ओर से सत-सत प्रणाम करता हूँ।

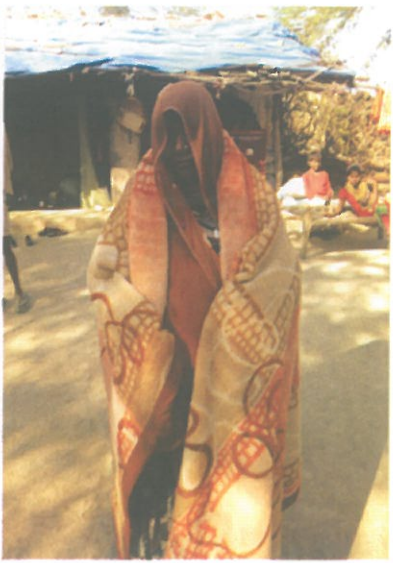

दिसंबर 22

आज सुबह जल्दी उठकर गनपत खेड़ा कम्बल वितरण करने गया, ताकी औरतें मजदूरी करने से पहले मिल जावे।

ये गरीबी की चरम सीमा पर जीवन निर्वाह करते हैं, पूरे गांव के बच्चे कुपोषित हैं। यह कम्बल उन औरतों को दी जो चिथड़ों में लिपटी रहती हैं, चेहरा बदरंग हो गया है व एनिमिक हैं। इसे पांच लोगों को और देना है।

दिसंबर 23

आज बहुत कड़ाके की ठंड है, पारा बहुत नीचे गिरने वाला है। जिन महिलाओं को कम्बल दिया उनकी रात व दिन तो अच्छी तरह से निकलेगी। आज सुबह में जब गांव गया तो देखा कि सब अपने शरीर पर फटे पुराने कपड़े पहने हुई थी, मैंने कहा कि आपके लिये किसी ने दिल्ली से कम्बल भेजे हैं। तो सभी मेरे पांव थोक (माथा) लगाने लगी, तो मुझे बहुत बुरा लगा, कि हमारे देश ने इतनी तरक्की कर ली है, फिर भी इतने लोग चीथड़ों में लिपटे रहते हैं। क्या करें, कैसे करें कि कोई भूखा ना सोवे?

एक दिन हरषा सिंह (ndtv में जो काम करते) ने कहा मुझे ऐसा गांव दिखाओ जहां बच्चे कुपोषित हो, तो हम भीलोकाखेड़ा ले गये। स्वास्थ्य मानक से एक भी बच्चा तंदुरुस्त नहीं निकला, बल्कि महिलाएँ तक ऐनिमिक थी।

दिसंबर 24

गांव भेरूखेड़ा की मगनी बाई भील को जल्दी उठकर मैं भोजन सामग्री देने गया। यह सामान देने के रुपए नीरज शर्मा जी द्वारा दिया गया है। मगनी बाई को दिखता नहीं है, उसे मोतियाबिन्द हो गया है। सावरा जी कैम्प लगा तो मैं उसके पास गया कि इलाज कराने चले, तो ऑपरेशन के नाम से वह डर गई।

दिसंबर 25, 2017

आज सुबह जल्दी उठकर अमरपुरा गांव में विधवा व भील आदिवासी महिलाओं को कम्बल वितरण कि गई, जो (नीना जी दिल्ली वालों के द्वारा दी गई थी)

जनवरी 2, 2018

आज सुबह जल्दी उठकर मैं हटीपुरा गांव में कंबल बांटने गया। यह पूरा गांव भील आदिवासियों का है जो 120 घरों की बस्ती है। इस गांव की सब ज़मीन शेर खां के कारिंदों ने खरीद ली है, क्यूंकि इस ज़मीन के नीचे बॉक्साइट दबा पड़ा है।

भीलों को पच्चास हज़ार रुपए पकड़ा दिया गया और ज़मीन के नीचे दबा माल करोड़ों का है। कुछ ही दिनों में इस गांव में बड़ी-बड़ी मशीने आ जावेगी और पूरे दिन गड़गड़ाहट से ज़मीन का धन निकाल कर ले जावेंगे। इस गांव में भी गरीबी का आलम वही है जो और गांवों का है। उत्कर्ष जी व प्रत्यूष जी दोनो भाई दिल्ली के है। उन्होंने दो सौ चालीस कंबल बांटने के

लिए प्रदान किये। मैं उन्हें अपनी और गरीब महिलाओं की तरफ से ढेर सारा धन्यवाद देता हूं।

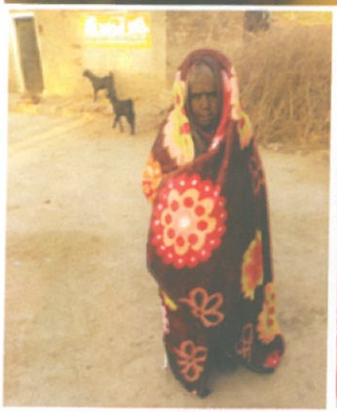

जनवरी 2, 2018

आज शाम को मैं दो गांव में कंबल बांटने गया। एक आंतरी नाहरगढ़ पंचायत और दूसरा अचलपुरा, यह नाहरगढ़ में ही है। आंतरी गांव में तीन जातियां निवास करती हैं। गूजर, राजपूत व तीसरी भील, भीलों में शिक्षा का रिवाज नहीं है।

इनमें अस्सी प्रतिशत बंधुआ मज़दूर हैं। महिलाओं के चेहरे पर काले दाग हैं, सब फटे चिथड़े में अपने-आपको ठंड से बचाने की कोशिश करते हैं। जब मैं शाम को गया तो उनसे बोला कि आपके लिए प्रत्यूष जी व उनके भाई उत्कर्ष जी ने बिना रुपए लिये कंबल भेजे हैं। इन दोनों गांवों में बीस कंबल बांटे, इन दोनों भाइयों को औरतें खूब आशीष दे रही थी।

जनवरी 10

आज जीप उठाई, कंबलें जीप में डाली और निकल पड़े। आज करीब पंद्रह गांवों में गए, पर बांटी सात गांवों में ही। वो भील बस्ती के कुछ लोग गरीब बनकर भी आए, लेकिन हम तो शक्ल देख कर ही पहचान जाते हैं कि कौन गरीब है।

करीब सतावन महिलाओं को ही कंबले बांटी गई। यह सब कंबले हमें गरीबों में बांटने के लिए दिल्ली से नीना वर्मा

जी और उनके परिवार की तरफ से भेंट की गई। कुछ औरतें तो यह भी कह रही थी कि इससे हमारी गुजर जावेगी।

जनवरी 11

भील कट्टी गांव में आज सुबह हम मीटिंग करने वास्ते गए, इस गांव में एक सौ पच्चीस घरों की बस्ती है। ज़्यादातर सारे भील बंधुआ मज़दूरी के

सामान ही काम करते हैं, पूरे गांव में एक ही लड़का बीए कर रहा है और सत्तर प्रतिशत लड़कियां स्कूल नहीं जाती हैं।

राशन की बात को लेकर मीटिंग की गई, सबके राशनकार्ड मंगा कर देखे गए कि किसको राशन का गेहूं मिलता है और किसको नहीं। सब ने नारे लगाने शुरू किया, 'कमाने वाला खाएगा, लूटने वाला जावेगा।' फिर किसी ने कहा कि आज कोटा बंद है, तो हमने गरीब बेसहारा महिलाओं को बारह कंबल बांटने का काम किया। यह सब कंबल दिल्ली से नीना वर्मा जी की तरफ से हमें दिए गए कि आप ज़रूरतमंद लोगों को कंबलें बांट देना, वही कंबलें हम बांट रहे हैं।

जनवरी 11

आज कंबल बांटने का काम पूरा हुआ। शाम को भूतिया गांव में गया, यह गांव नदी के किनारे पर स्थित है और दो टुकड़ों में बंटा हुआ है। दक्षिण में पूरे जाट परिवार रहते हैं जिनके काफी बड़े मकान, गाड़ियां वगैरह सब कुछ हैं। पूर्व में भील, मेघवाल, मीरासी, नाई और राजपूत जातिया निवास करती हैं। इसमें भील सबसे ज़्यादा संख्या में हैं।

यह जो खाट पर बैठे विकलांग व्यक्ति हैं, इनकी ना ज़मीन है और ना बेटा है अलबत्ता औरत ज़रूर है। वो ही मज़दूरी करके खुद का और पति का पेट भरती है। आज इस गांव में सत्रह महिलाओं को कंबल बांट कर आया हूं। नीना जी ने मुझे इन कंबलों को गरीब विधवा महिलाओं में बांटने का

जिम्मा सौंपा, जिसे मैंने बेखूबी पूरा किया। नीना जी के पूरे परिवार को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद अर्पित करता हूं। काफी दिन लग गए बांटने में।

जनवरी 12

आज सुबह मैं जल्दी उठकर अमरपुरा में रतनी मेघवाल को छह सौ रुपये का सामान देकर आया। यह सब सामान का खर्च रंजना जी ने दिया जो प्रेम जी फान्डेशन दिल्ली में काम करती हैं।

वरदी का पति भग्गाजी, गांव भेरूखेड़ा में इसे बहुत कम दिखता है। इसके ना ज़मीन है और ना बेटा, यह गरीबी का जीवन व्यतीत कर रही है। यह बात मैंने नीरज शर्मा जी को बताई, तो उन्होंने बोला कि मेरी तरफ से उसे एक हज़ार रुपए का खाने-पीने का सामान दे दिया करो। उसी के तहत यह सामान देकर आया हूं, इन दोनों को मैं ढेर सारा धन्यवाद अर्पित करता हूं।

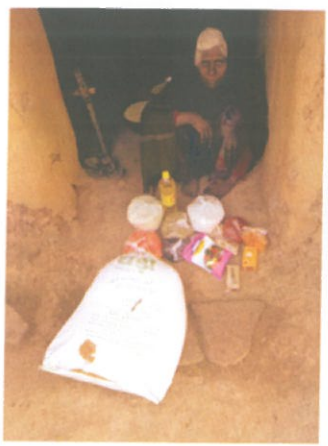

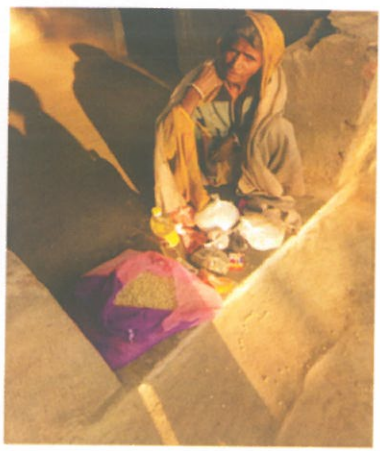

जनवरी 12

आज शाम को लदेर गांव की रतनी के पति कैला जी भील के खाने का सामान खत्म हो गया था। जब मैं देने गया तो वह मुझसे बोली कि आज नरेगा पर काम करने गई थी। बहुत थक गई। वह बोली कि अब काम नहीं हो पाता है।

जब इनको टीबी हो रही थी तो मैंने स्कूल टीचर से बोला था कि यह रतनी बाई भूखी रहती है तो उसको खाना पहुंचा देना। मैं जिस दिन गांव जाता तो खाना लाकर उसे पकड़ा देता, लेकिन टीचर ने खाना देने में कोई रुचि नहीं दिखाई।

फिर मैं आंगनबाड़ी की मैडम के पास गया तो वह बोली कि हमारे ऊपर वालों से पूछकर दूंगी। उसने भी ना बोल दिया, फिर इसकी भूख की कहानी लिखी तो अमरीका वाले नीरज जी ने पढ़ी और मुझे बोला कि मैं मदद करने के लिए तैयार हूं। आप इसको खाने का सामान हर महीने दे देना। तब से मैं उसे सामान देने लगा, अब उसकी हालत में सुधार भी आया है। अब वह भूखी नहीं सोती है, मैं तहेदिल से रतनी बाई की तरफ बहुत धन्यवाद देता हूं। बीस किलो गेहूं, पंद्रह किलो मक्का और बाकी खाने का सब सामान देकर आया हूं।

जनवरी 13

मेडिया गांव में अनाज बांटने गया तो बहुत परेशानी हुई, मोटरसाइकिल पर रास्ते में बैग फट गया। गेहूं निकल गए, फिर वापस घर से दूसरा बैग लेकर गया। फिर जब गांव में पहुंचा तो बहुत सी महिलाएं आ गई और कहने

लगी कि हम भी बहुत गरीब हैं, हमें भी दिया करो।

खैर सुननी तो सबकी पड़ती है पर हमें मालूम है कि कौन भुखमरी की स्थिति में है, हम उसका ही चयन करते हैं। आज जो गेहूं बांटा गया, वो डीशा (गुजरात) की जज साहिबा से मिला है। वह महिलाओं को भुखमरी से निजात दिलाने के लिए दो परिवारों को हज़ार रुपए प्रतिमाह दान स्वरूप मुझे देती हैं, जो मुझे भुखमरी में जीवन व्यतीत करने वालों को देना है।

जनवरी 14

रामेशी बाई गांव नेडिया की रहने वाली है, इसका एक बेटा है जो पच्चीस साल का है। तीन बच्चे पैदा होने के बाद उसकी औरत उसे छोड़कर चली गई तो रामेशी के बेटे का दिमाग खिसक गया। उसके पास कोई ज़मीन नहीं है। जब गांव वालों को पूछा तो वो बोले कि यह बच्चे भूखे मरते हैं।

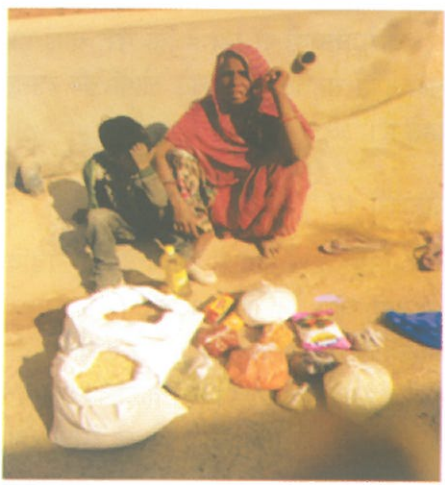

जब मैं उनके घर गया तो मैंने वहा देखा कि घर के दरवाजे पर कुंडी तक नहीं है। सब बिस्तर फटे पुराने है, तो फिर मैंने नीना जी ने जो

कंबल गरीबों को बाटने के लिए दिए थे वो उन्हें दिए।

डीशा की शेशन जज साहिबा की तरफ से हज़ार रुपए की सामग्री मैं उन्हें देकर आया। यह काम सरकार का है कि जो भूख से तड़प रहा है उसकी सुध लेवे, लेकिन सरकार इतनी संवेदनशील कहां है? यह महिला रामेशी शेशन जज साहिबा को देखने की इच्छा जता रही है, मैं अपनी ओर से ढेर सारा धन्यवाद देता हूं।

जनवरी 16

प्यारीबाई की उम्र कोई 85 वर्ष की है, मैं इनसे मिलने पिछले आठ साल से जा रहा हूं। बीस दिन पहले गया तब वह बीमार थी, कपड़े मल से भर गए थे और पूरे घर में बदबू फैल गई थी। मैंने इसके दूर के भतीजे को कहा कि बिचारी के कपड़े मल से भरे पड़े हैं, वो तो साफ कर दो। फिर इनको साफ किया गया, इनके पति को मरे कोई पच्चीस साल हो गया है, इनकी कोई औलाद नहीं है।

कैसे बीचारी रो रही है कि मेरा कोई होता तो ऐसी हालत थोड़े ही होती, लेकिन मैं बहुत से ऐसे बूढ़े लोगों को जानता हूं, जिनको रोटी के लाले पड़े रहते हैं।

जनवरी 17

गनपतखेड़ा गांव में स्कूल है पर लड़कियां वहां पढ़ने नहीं जाती, लड़के भी नहीं जाते है। भीलों में पढ़ने का रिवाज ही नहीं है, इसको कैसे बदल सकते हैं? इस गांव में हर साल टीबी से दो-तीन लोग मरते हैं। छः साल के बच्चे बंधुआ मज़दूर हैं। मैंने कहा छुड़वा देते तो बोली नहीं हमने रुपए लिया है, वहां कम से कम खाने को तो मिल रहा है। इस से जाति का कैसे उद्धार

होगा? शिक्षा नहीं है, ज़मीन भी नहीं है। रात पड़ी दारू शुरू, फिर बिना खाये ही सो जाते हैं। फिर पकड़ती है टीबी।

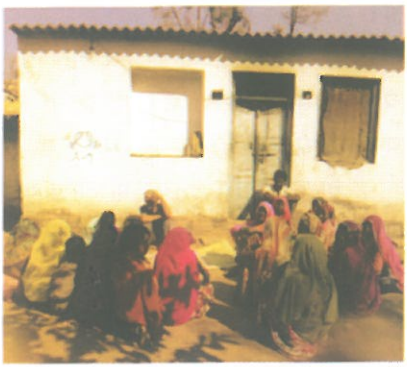

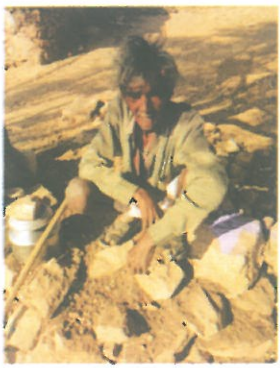

जनवरी 17

कल मैं अगोरिया मंगरी पर गया। मैंने प्यारी जिसके पति नारायण अब नहीं हैं, के बारे में पहले लिखा था कि वह 85 साल की बूढ़ी महिला है। उसके आगे-पीछे कोई सहारा नहीं है। कभी खाना मिलता है और कभी नहीं। उसे पैंतीस किलो गेहूं मिल तो सकता है, लेकिन वह सत्तर रुपए भी कहां से लाए?

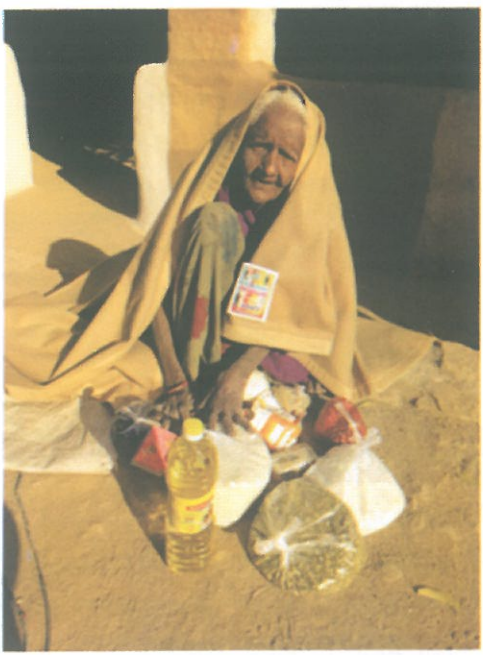

वह चल-फिर नहीं सकती तो मज़दूरी कहां से करती? कल मैंने यह वाक्या फेसबुक पर डाला तो अर्पिता जी ने पढ़ा और

तुरन्त उसके खाने की व्यवस्था के लिए हज़ार रुपए भेज दिए। मैं उन माई को पांच सौ रुपए का खाने का सामान देकर आया, बाकी के पांच सौ रुपए का सामान अगले महीने दे आऊंगा।

कंबल मुझे किसी और (नीना वर्मा जी दिल्ली वाली) ने दान दी, वह खरीद कर नहीं दिया। जिस समय मैं सामान दे रहा था, वह इतने आशीष दे रही थी तो मैं बोला यह मैं अपने घर से नहीं दे रहा हूं। मैंने उनसे कहा कि किसी और ने आपकी मदद की है तो वह बोली उनका भी लाख शुक्रिया कहना भगवान आपको खुश रखे। अर्पिता जी यह आपको पास कर रहा हूं।

जनवरी 20

आज मैं पलासिया गांव यह देखने गया कि बच्चे पढ़ने जा रहे हैं या नहीं। दलित, भील और आदिवासी के जिन घरों में काम करने वाले हैं, वो पढ़ने जा रहे हैं बाकी बकरी चराने का काम करते हैं।

यहां एक बहुत पुराने शिलालेख पर 1369 सन लिखा हुआ है। एक बार यह गांव उजड़ गया, नदी में आई बाढ़ के कारण सारे लोग या तो चले गए या मारे गए। पहले यहां तैला, कुम्हार और नाई जाती के लोग रहते थे। दो सौ साल पहले यह गांव वापस आबाद हुआ है। अभी यहां जाट, राजपूत, भील और मेघवाल रहते हैं।

यह जो मैंने फोटो खींचकर कर डाले हैं यह पुराने ज़माने के मंदिर के अवशेष हैं। यह गोलनुमा पत्थर उल्का पिन्ड का टुकड़ा है। मेरा वजन पच्चास किलो है, पर मेरे से यह हिलता नहीं, मेरे साथी रामचन्दर ने उसे उठाकर मंदिर के चक्कर लगा दिए थे।

जनवरी 23

गुड्डी पिछले एक सप्ताह से स्कूल नहीं आ रही है। उसको यहां पर बुखार आ गया था तो हमने उसे घर भेज दिया, आज उसको लेने गया था। उसके दादा ने बोला कि वह कुंए पर गई है, उसका कुंवा एक किलोमीटर दूर था। लेपरेड करता वहां पहुंचा तो वह मक्का साफ कर रही थी और उसके पिता गेंहू को पानी दे रहे थे। मैंने उसको समझाया कि कम से कम आठवीं तक पढ़ाई कर ले, कही संरपच तो बन ही जावेगी। अब वह आने की कह रही है।

जनवरी 25

यह मदन भाई हैं, आवरीमाताजी में रहते हैं और बांस की टोकरी बनाते हैं। एक टोकरी का 150 रुपए लेते हैं, एक दिनमें एक ही बना पाते हैं। एक महीने से अचलपुरा रह कर टोकरियां बना रहे हैं।

जब मैं इनके पास बैठा था तो कुछ औरते मेरे पास आई और बोली कि इनको एक महीना हो गया है, यह स्नान नहीं करते। आप इनको समझाओ। मैंने बोला नहा लिया करो, तो बोले ठंड कितनी पड़ रही है।

यह दूसरी बरदी बाई भील हैं इनके एक बेटा है वो बंधुआ मज़दूर है, यह ब्यावर में रहती हैं और बहुत गरीब है। मैंने उनको तीन महीनों तक खाने पीने का सामान दिया तो दूसरी औरतें बता रही थी कि यह सामान अपनी बेटी को दे देती है, फिर भूखी पड़ी रहती है। इस बार मैंने नहीं दिया, जब तक अपनी बेटी को देना बंद नहीं करेगी तब तक नहीं देंगे। फिर मैं तीसरे गांव गया, भीलों का खेड़ा।

जनवरी 27

चरपोटिया गांव से अलग जाकर रामदेव नगर में दस मेघवाल परिवारों ने अलग बस्ती बसा ली। ठाकुरों से परेशान होकर ये लोग गांव छोड़कर चले गए, यही इसका मुख्य कारण था। यहां रावले के सामने सायकिल पर बैठकर नहीं जा सकते थे।

इस गांव के एक टीचर हैं सालिग राम जी मेघवाल। वो एक दिन स्कूल में कुर्सी पर बैठकर पढ़ा रहे थे, एक बन्ना साब स्कूल में गए तो वो खड़े नहीं हुए, फिर उनको पीट दिया कि मेरे सामने किस तरह बैठे हो। मैं आज यहां होम्योपैथी दवा बांटने गया।

जनवरी 28

मेरे घर से भूतिया गांव जाने में बीच में एक नदी पड़ती है, रास्ता बहुत उबड़ खाबड़ है। गिरने के बहुत चांस है, मैं दो बार गिर चुका हूं। कुछ घरो की स्थिति बहुत जर्जर हो चुकी है, मैंने एक दीवार का फोटो खींच कर डाला है।

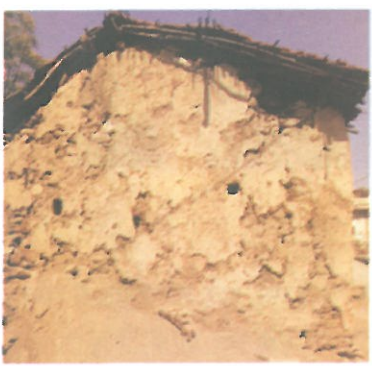

दूसरा फोटो एक भील का है, उम्र कोई साठ साल की होगी। ज़मीन-औलाद नहीं है अलबत्ता औरत है, वो ही मज़दूरी लाकर अपने पति को खिलाती है।

जनवरी 30

हट्टीपुरा गांव, यह गांव भील आदिवासियों का है। पूरा गांव गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रहा है। हर साल दो-तीन लोग टीबी से मर जाते हैं। आज भी मैं अणसी बाई के घर गया, वो मौत की इंतज़ार में थी। मैंने कहा कि अस्पताल क्यों नहीं गई? तो बोली बेटा ले ही नहीं गया, अब तो चल-फिर भी नहीं सकती।

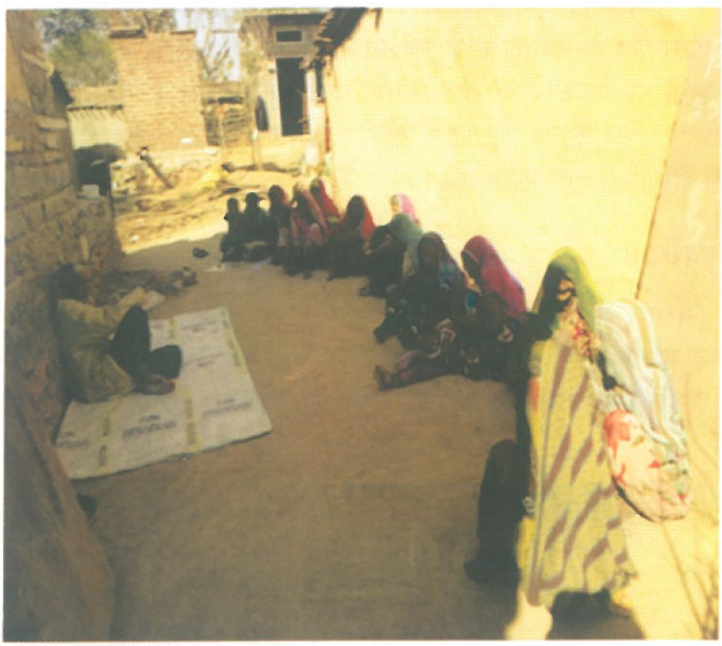

जनवरी 31

आज रविदास जयंती के अवसर पर हमारे गांव के स्कूल में पांच लोग मोटर सायकिलों पर रैली लेकर आए, तो हम सब लोगों ने फूलों की वर्षा

करके उनका स्वागत किया। साथ में सब लड़कियों ने पानी भी पिलाया, फिर नारेबाजी करके रैली को रवाना किया। चलो इसी बहाने दलितों में चेतना तो आ रही है।

फरवरी 3

हमें दान में जो भी कंबले मिली, सब आज गनपत खेड़ा में बांट दी। औरतें आपस में झगड़ने लगी कि इसके घर में दो महिलाओं को मिल गई। यह भी भील आदिवासियों का गांव है। इतनी बुरी हालत तो पूरी आदिवासी एरिया में कहीं भी नहीं है, पूरे गांव में बस एक लड़का ग्यारहवीं में पढ़ता है।

फरवरी 4

हरिराम भील गांव चौपाखेड़ी (धीरजी का खेड़ा) उसके दो बेटे, पोता-पोती सब हैं। उसने मुझे फोन किया कि आपका दोस्त हरिराम बोल रहा हूं, आप मुझसे जल्दी मिलने आ जाओ तो मैं तुरन्त गया और उसके लिए एक कंबल लेता गया।

मुझे देखकर वह मेरा हाथ पकड़कर रोने लगा, बोला कि अब मैं जा रहा हूं। मेरे दोनों बेटे नालायक निकल गए, मुझे सरकार से मकान बनाने वास्ते जो रुपए मिले उसमें से सत्रह हज़ार रुपए लेकर वो चले गए। मैंने

पूछा कि रोटी देते हैं या नहीं? पुलिस में रिपोर्ट करके इलाज करवा सकता हूं। उसने कहा, हां रोटी तो दे रहे हैं। गांवो में लकवा से पीड़ित बहुत लोग मिल जावेंगे, यह मेरा दोस्त हरिराम भी लकवा से ग्रसित हो गया है।

फरवरी 5

गांवों में देवरे (मंदिर) बन रहे हैं और बनते रहेंगे, कुछ भी बीमारी होने पर लोग सबसे पहले देवरे ही जावेंगे। भोपा के शरीर में भाव आता, वो बोलता अब कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। फिर उसे पूछते कि कितने दिन? वो बोला दो महीना आना पड़ेगा। जितने बीमार की हालत बिगड़ती जाती तब घर वाले दूसरा देवरा ढूंढते, लेकिन बीमार की हालात गिरती जाती। तब कोई राय देता कि अस्पताल ले जाओ, तब तक बहुत देर हो चुकी होती।

65% तो मर जाते हैं। आज जब मैं कनौजिया गया तो सालवी समाज के लोग नया देवरा बना रहे थे। लेकिन खुद के मकान टूटे-फुटे है। कब

हमारे देश में जागरूकता आवेगी। इन सब बीमारियों का एकमात्र इलाज शिक्षा है, पर वो आती दिख नहीं रही है। अभी भी आधे से ज़्यादा लोग अनपढ़ हैं।

फरवरी 6

यह गांव स्कूल वाला अगोरिया है, पहला फोटो रामी बाई भील का है। इनको खांसी चल रही है। दूसरा भगवानी बाई का है, इनको दस दिन की खांसी चल रही है। इनको पांच दिन की दवा ब्रायोनिया 200 देकर आया हूं। भगवानी बाई को टीबी हो सकती है, मैं कल जाकर जांच करवाने की कह कर आया हूं।

फरवरी 7

गांव भालून्डी, तीनों भील महिला आज मटर तोड़ने की मज़दूरी करने गई थी। मज़दूरी के साथ मटर भी देते हैं। वो मेरे से उम्र में काफी बड़ी हैं, उठकर पांव छूने लगी तो मैंने कहा यह क्या कर रही हैं, मैं पीछे हट गया। फिर जो मटर रखे थे, मुझको देने लगी। मैंने कहा नहीं लेकर जाऊंगा। तीसरा फोटो सवा जी रेबारी का है। सौ पार कर गए, अब चलने-फिरने की हिम्मत नहीं है, शरीर जबाब दे गया है।

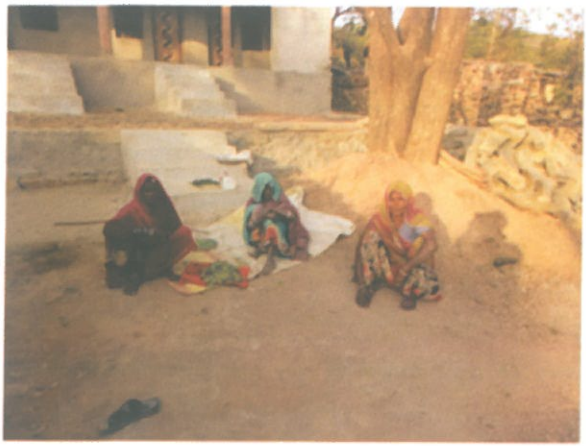

फरवरी 11

आज शेरगढ़ गांव जाना हुआ, इसका रास्ता जन्नत महल के पास से होकर जाता है, पक्की सड़क है। पहले सांड़ गांव आता है, फिर रास्ते में गुजरों के घर आते हैं जो सब संपन्न लगते हैं। दोनों ओर सड़क के किनारे बड़े-बड़े मकान हैं।

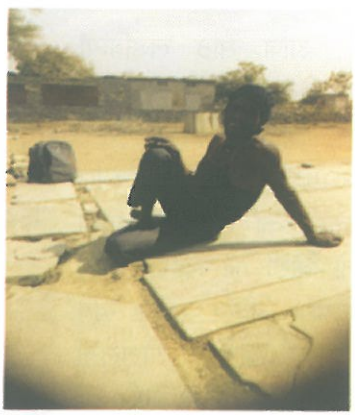

आगे जाने पर शेरगढ़ गांव दिख जाता है। गांव में चक्कर लगाया तो ज़्यादातर मकान पक्के दिख रहे थे। फिर मैंने कहा कि किससे बात की जाए? फिर मुझे एक घर खुला हुआ दिखा, वहीं चला गया। मैंने कहा

आपका नाम क्या? बोला रतनभील। मैंने पूछा यहां गरीब कोई नहीं लगता है। बोला ऐसा कैसे लगा? मैंने कहा सब पक्के मकान हैं। तो वो तपाक से बोला यह सब सरकार द्वारा बनवाए गए हैं। फिर बोला कि सब भूमिहीन हैं। अभी आठ लोग बंधुआ मज़दूरी करते हैं। मैंने पूछा कौन है? तो बोला दो तो मेरे साले हैं। बाप मर गया; पांच भाई-बहिन थे, मां छोड़कर चली गई। लड़कियों को भील लेकर चले गए, बच्चे भूखे मरने लगे तो दो को मैं लेकर आ गया। मेरे पास अनाज नहीं है तो मैंने सोचा कि इनको हाली रख देता है, तो मैंने दोनों को पायरी ठाकुरों के यहां रख दिया।

फिर बात को आगे बढ़ाया कि इस गांव का नाम शेरगढ़ क्यों पड़ा। तो रतन बोला यहां पहले एक ही घर था, उनका नाम शेरसिंह था। उसके बाद वो दो नौकरों को लेकर आए, वो दोनों भील थे। मैंने पूछा क्या गढ़ बना हुआ है। नहीं कच्चा घर था, अब धंस गया है। फिर धीरे धीरे और भील आकर बस गए, आज के दिन पैंतीस घर हो गए। बातचीत के द्वारान दो और लड़के आ गए। रतन बोला यह दोनों भी बंधुआ मज़दूर हैं। मैंने उनका वीडियो बना दिया, आप भी सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करो।

फरवरी 11

आज साठ लड़कियों को लेकर खेतों में बोर खाने ले गया, लड़कियां ईतनी उधमची थी कि थका दिया। किसी का गेहूं तोड़ दिया तो किसी का लहसन तोड़ दिया। लेकिन सबने खूब जमकर खाया व पोटलियां बांधकर भी लेकर आई।

फरवरी 13

आज होडा गांव गया, होडा पहाड़ की वजह से इस गांव का यह नाम पड़ा। गांव के चारों तरफ घोसुन्डा डैम के पानी के कारण यह डूब क्षेत्र में आ गया है, इसलिए कोई विकास का काम नहीं होता।

सबसे ज़्यादा घर भीलों के हैं। चार महिलाओं को टीबी ने पकड़ रखा है और एक मर चुकी है। सिक्सलाईन वाले पहाड़ खोद कर ले जा रहे हैं, पच्चास फीट गहरा खड्डा खोद दिया है। घरों के पीछे से खोद कर ले जाने पर एक भील ने विरोध किया, तो कम्पनी वाले पुलिस को लेकर आए और उसे सबके सामने पीट दिया। बेचारा डर के मारे चुप हो गया। कुछ बेरोज़गार भील युवा पहाड़ से पत्थर निकाल अपनी आजीविका चला रहे थे। उनको कहा गया कि यहां से पत्थर नहीं निकालोगे। अगर भील कमाकर खाने लग जावेंगे तो इनके मोहताज नहीं रहेंगे, यह है जाति व्यवस्था का नंगानाच।

फरवरी 14

आज फिर होडा गांव में मीटिंग करने गया जो महादेव के चबूतरे रखी गई। कुल महिला पुरुष पच्चास लोग आए। सबसे पहले मैंने नीराणी को पूछा कि मीटिंग क्यूं रखी है? उसने बताया कि हमारे नाम की अर्जी दी किसी ने। यहां सिक्सलाईन सड़क बन रही है, वो गांव का पहाड़ खोदकर ले जा रहे हैं, इस गांव के ब्राह्मण वर्ग के लोग नाराज हो गए हैं। हम गरीब लोग पहाड़ से पत्थर खोद कर ले जा रहे थे तो हमें रोक दिया, अ्ब हम थोड़ा बहुत कमा कर खाते थे वो रोक दिया।

गांव में आज भी जातीवाद भयंकर रूप से फैला हुआ है। भील लोग बताने लगे कि अब हम इनके यहां मज़दूरी करने नहीं जाते, तो हमारे आमदनी के रास्ते में वाट लगा देते हैं।

फरवरी 16

गांव गोपालपुरा में महिला मीटिंग रखी गई। सरकार द्वारा बनवाई गई लेट्रिंग का कितने लोग उपयोग करते हैं? तो सब ने कहा कोई भी नहीं। मैंने पूछा कि क्यूं नहीं करते हैं, तो बोली यहां पर बहुत जगह है। फिर जंगल जाने के क्या नुकसान हैं, इसकी जानकारी उन्हें दी।

जब पेट में औरत के बच्चा होता तो क्या खाने को देते हैं? कोई भी सफेद चीज जैसे दूध, घी, दही, मूंगफली। फिर उनको तफसील से समझाया कि खाना व बच्चा दोनों अलग थेलियों में होते हैं। जन्मते बच्चे को गुड़ खिलाते हैं, मैंने उनको पूछा गाय, भैंस, बकरी के बच्चे को गुल्ला क्या नहीं देते हो? फिर उनको समझाया कि प्रथम दूध कितना पौष्टिक होता है फिर आखिर में मैंने मज़दूर कार्ड की बात की।

फरवरी 17

यह इमली का पेड़ अरवोदा गांव में है, यहां किसी जमाने में गांव हुआ करता था। अब वीरान हो गया है। यहां पर 200 घरों के खंडहर मौजूद हैं। यह आन्तरी गांव की भील महिलायें हैं, यहां पर आठ घर हैं, और कोई बच्चा स्कूल नहीं जाता है।

यह जो भगवा रंग के कपड़े पहने हुए है, इसका नाम शंकर भील है। यह सांड गांव के पास एक शिव मंदिर पर रहता है, इसने घास-फूस की टापरी बना रखी है। पिछले साल आधी रात को एक जानवर इसके पैर को खाने लगा और शंकर के पांव से खून बहने लगा। उसने जो चद्दर ओढ़ रखी थी, उसी को जानवर पर डाल कर बैठ गया। जब तक वो निढाल नहीं हो गया तब तक, पुरी रात वह उसी पर बैठा रहा। सूबह ज़ोर से आवाज देकर गांव वालों को उसने बुलाया और बोला कि लाठियां लेकर आना, मैंने शेर को पकड़ रखा है। जब शंकर ने रजाई हटाई तो वह एक जरख निकला जो तब तक मर चुका था। खूब

अखबारो में इसका और जरख का फोटो छपा, दो कटिंग इसने अभी भी संभालकर रखी हैं।

फरवरी 19

रतनी बाई भील गांव लदेर की है, यह भूमिहीन बहुत बुड्ढी हो गई है। यह मैंने फेसबुक पर डाला तो नीरज शर्मा जो अमरीका में रहते हैं, उन्होने बोला कि मैं रतनी जी के लिए हज़ार रुपए महीने का सामान देना चाहता हूं। मैंने रतनी बाई के घर जाकर पूछा कि आप को सामान देना चाहते हैं। पहले तो बोली मैं धर्म का सामान नहीं लेना चाहती हूं, बैठकर समझाया तो फिर मान गई। आज बीस किलो गेहूं और बाकी सब सामान देकर आया हूं।

फरवरी 20

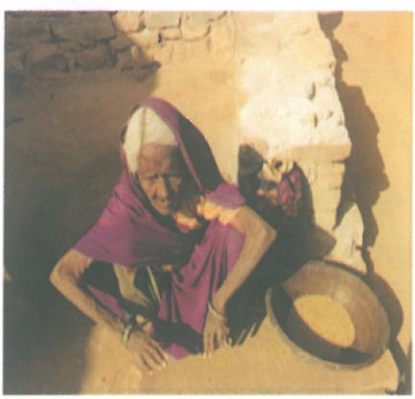

प्यारी के पति नारायण को मरे 15 साल हो गए हैं। ज़मीन नहीं, बेटा नहीं। उम्र भी 85 के पार हो गई है, मज़दूरी को कोई नहीं बुलाता। इनके खाने-पीने की व्यवस्था का जिम्मा अर्पिता जो बैंक में काम करती हैं ने लिया, उन्होंने एक हज़ार रुपए

दिए। 500 का सामान पिछले महीने डालकर आया और पांच सौ रुपए का आज डालकर आया। मैंने पूछा कि जो आपको सामान दे रही है उनके लिए कुछ कहना है? उसने कहा कि मेरी उम्र में पांच साल बढोतरी कर दी, उनको भगवान खूब देवे।

फरवरी 21

कुशबा की मां मौत मरण मएनमोडी खेड़ा गांव गई है, उनकी खास रिश्तेदारी में ही है। दो दिन से सामान लेकर जा रहा था, फोटो उनका खीचकर डालना था। अब मुझे आते नहीं दिख रही, उसकी बेटी को हज़ार रुपए का सामान खरीदकर दे आया। बीस किलो गेहूं बाकी पूरा महीने का जो भी घर रसोई के जरूरत का सामान था देकर आया। यह सामान भी नीरज शर्मा जो अमरीका में रहते हैं, उनकी तरफ से असहाय महिला को दिया जाता है।

फरवरी 22

रूपा जी भील, गांव नंगावली। इनकी भैंस घूटे से बांधते समय भड़क गई तो उनका अगूठा पेड़ के बीच में आ गया और वह कट गया। बेचारा गरीब ऊपर से यह हाल कि खाना भी नहीं खा सकता है। जब मैं कनोज मंगरी गया तो देखा वह अपनी बेटी के यहां पर एक महीने से रहकर आराम कर रहे थे। बहुत दर्द होने पर उसकी बेटी मुझे बुलाकर ले गई थी। मैं उनको आर्निका देकर आया।

फरवरी 23

यह प्यारी है, इसके पति रामा जी को मरे बीस साल हो गए हैं। यह गांव टान्डीखेड़ा में रहती है, जो सावरिया मंदिर से तीन किलोमीटर दूर है। आगे पीछे कोई नहीं, ज़मीन भी नहीं है। मैंने पूछा की आपको खाना कौन देता है? तो बोली दो घरों से रोटी मांगकर लाती हूं। मुझे बोली मकान पास मत करवाना, मैं ज़्यादा दिन की मेहमान नहीं हूं।

यह हमारे देश की हालत है। सरकारी कारिंदों को खुद जाकर ऐसे लोगो

को ढूंढकर मदद करना चाहिये। इनके मकान का दरवाजा भी नहीं है। क्या फायदा दुनिया में तीसरी बड़ी शक्ति का देश कहलाने का? कोई औचित्य नहीं है। इस देश में गरीबों की सुध लेने वाली सरकार चाहिए।

फरवरी 26

यह गांव पोटला कला है। यहां पर भीलों के दस घर हैं, इस गांव में तीन जातियां रहती हैं। भील, गाडरी और राजपूत। सबसे बड़े और अच्छे मकान राजपूतों के हैं। भील यहां पर भी जमीदारों के यहां ट्रैक्टर चलाने का काम करते हैं।

यहां पर एक किसान है। जब मैं गया तो मैंने पूछा कि इलाज कहां करवाते हो? तो बोले बंगालियो के यहां पर। मैंने कहा सरकारी में क्यों नहीं जाते हो? सब एक मत से बोले कि दवा काम नहीं करती है। अगला सवाल- आप में से कौन सरकारी दवा लेने गया? तो सब चुप। यह किसकी चाल है? जो इन लोगों को अस्पताल जाने से रोकते हैं, उनका क्या स्वार्थ है? यह एक बड़ी साजिश है।

मार्च 1

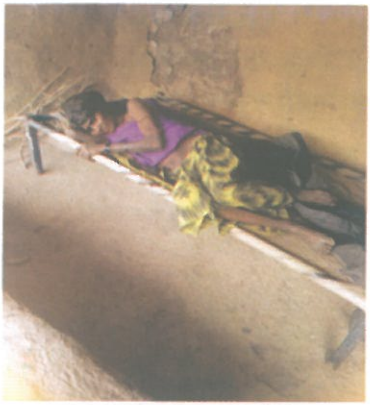

आज होली है, मैं शोरम भील के गांव भेरूखेड़ा गया तो वह तड़प रही थी। मुझे बोली कि आप मुझे देखने नहीं आए। बोली अब मैं मर जाउंगी, मुझे घर वाले तो कोई नहीं ले जावेगा हाथ पांव जोड़ने लगी। मुझे बचा लो, फिर मैंने इधर-उधर फोन किए अस्पताल लेकर गया बीपी बढ़ा हुआ था। एक सूई लगा दी व दवा दी, अब वापस छोड़ने की बात, मैं रात को गाड़ी नहीं चला सकता, फिर मैंने कोमल को बोला तो वह बात मान गया और उनको छोड़कर आया।

मार्च 3

बरदी बाई, भेरूखेड़ा। आज मैं उसके घर गया तो वह बोली कि मैं कुछ भी खाती तो पेट में टिकता ही नहीं है। मैं समझ गया कि इनको फूड पोइजनिंग हो गया है। तब मैं आर्स 30 व ईपिकोक देकर आया, कैसे खाना है उसकी विधि भी समझाई।

मार्च 4

शायरी, भील गांव भीलों का खेड़ा (नाहरगढ़)। इसकी आठ साल की उम्र में एक जवान आदमी से शादी कर दी थी, उसका वो पति दूसरी औरत

लेकर आ गया। फिर इसको शूरपुर में नाते बिठा दिया, शायरी की ज़िंदगी ठीक से चल निकली। बीस साल उसके साथ रही कोई बच्चा नहीं हुआ। फिर एक दिन उसका पति बीमार हुआ और खाट पकड़ लिया, वो भी इसकी ज़िंदगी से दूर चला गया। शायरी वापस अपनी मां के पास आ गई।

इन दिनों वह बीमारी में चल रही है, घर में कुछ खाने को नहीं है। मुझे मेरे एक मित्र भँवर जी ने अंडे दिये खाने के वास्ते तो वो अन्डे मैं शायरी को देने गया। अंडे देखकर वह खुश हो गई। फिर गया वरदी बाई के घर, कल उनको उल्टी-दस्त की बीमारी हो गई थी। उसको भी दवा देकर आया, वो आज ठीक हो गई है। पूरी की पूरी भील आदिवासी कौम भुखमरी की शिकार है। वो जहां भी जाते लोग उनसे रुपए लेने के चक्कर में रहते हैं, लूटने वालों को दया भी नहीं आती है।

मार्च 7

गनपत खेड़ा, रात को वहीं रुका काफी देर तक। यह गांव शहरी कच्ची बस्ती से बहुत मेल खाता है। भीलों की कमोबेस सारे राजस्थान में यही स्थिति है। कच्ची बस्तियों में भुखमरी नहीं होती पर बच्चे गन्दे तो शहरों में

भी खूब रहते हैं, भील बच्चे भी नहाते नहीं हैं। जो सो रहा है वह रामलाल है। इसके घर में तीन लोग मर चुके हैं टीबी से। रामलाल की पत्नी इसे छोड़कर चली गई। इसकी कोई औलाद नहीं है, इसके भाई की पत्नी रोटी पकड़ा देती है वो भी नमक-मिर्च के साथ।

दूसरा कालू टीबी का मरीज है। जब मैं इसके घर गया तो वह टुन्न होकर बैठा था। उसने जेब से बीड़ी तम्बाकू के पैकेट निकाले और सरकार को गालियां बकने लगा कि सरकार बेकार है भगाओ इसको, मुझे भी गालियां बकने लगा कि दवाई निकालकर दे मेरे को। मैंने इसके घर से खिसकने में ही भला समझा लेकिन उसने हाथ पकड़ लिया, किसी तरह छुड़ाकर मैं वहां से रवाना हुआ।

मार्च 8

बदरी प्रजापत, गांव साल का खेड़ा। यह भूमिहीन है, दोनों पति-पत्नी मटके बनाकर गांवों के मेले में बेचने जाते हैं। वह बता रहा था कि उसके पास आयत के तीन गांव हैं, दाल-रोटी चल जाती है। कल रात को गड़रियों के यहां शादी थी, चाक पूजने आये थे। (बिजली से चलने वाला गोल चक्कर वाले को चाक कहते है) दो सौ इकावन रुपए भेंट स्वरूप दिया मेरे को। यह है गांव की अर्थव्यवस्था।

मार्च 12

रामेशी भील भुखमरी की शिकार हो रही थी। मैंने नीरज जी से बोला यह रामेशी भील है। इसके तीन पोते हैं। इन बच्चों की मां नाते चली गई बच्चों को छोड़कर, इनके बाप का दिमाग खिसक गया। ना कुछ काम करता, ना ही नहाता। जब मैं गांव गया तो गांव वालों ने कहा कि इन बच्चों की आप कुछ मदद कर सकते हैं, ज़रूर करना। तब इन दोनों महिलाओं को भूख से उबारने का जिम्मा नीरज जी ने लिया तब से मैं इनके लिए नियमित खाने की सामग्री पहुंचा रहा हूं।

मार्च 14

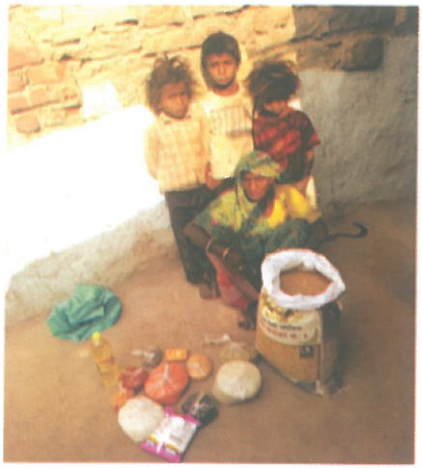

यह गांव नेडिया की बगदी बाई भील है। इसके बेटे की पत्नी तीन बच्चों को छोड़कर चली गई है। यह भूखे ही दिन बिता रहे थे, तब एक दानदाता दीपक यादव आगे आए जो हरियाणा के रहने वाले हैं और दिल्ली में जॉब करते हैं। वो बोले मेरी ओर से इस परिवार को एक महीने की खाद्य सामग्री के लिए हज़ार रुपए दे देना। मैं आज सुबह चालीस किलो गेंहू, नमक, मिर्च, हल्दी, जीरा, दालें तीन तरह की और तेल-साबुन दे आया। जब सामान देकर निकलने लगा तो बगदी बाई बोली कि मेरी ओर से उनको आशीष देना। वो खूब तरक्की करें और आगे बढ़ें जिन्होंने हमारी सुध ली।

मार्च 14

प्यारी बाई मेघवाल, गांव मंगरी का अगोरिया। यह अकेली रहती है और इसकी कोई औलाद नहीं है। मज़दूरी भी नहीं होती, इनको एक महीने का खाने-पीने का सामान अर्पिता जी ने दिया। उन्होंने जब तक वह जीवित रहेगी, हर महीने पांच सौ रुपए देने का वचन दिया। मेरा काम है उनको सामान पहुंचाने का, अर्पिता जी को ढेर सारा धन्यवाद देता हूं।

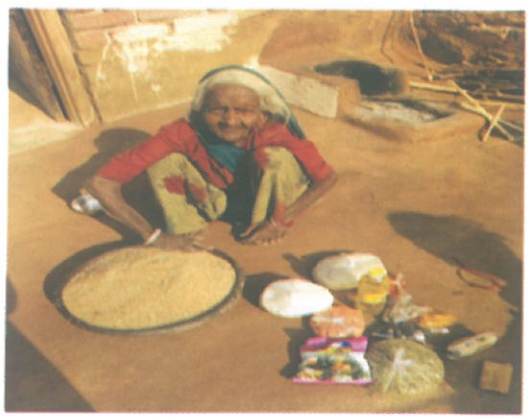

मार्च 16

यह शायरी है जो गांव भैरू खेड़ा (नाहरगढ़) की रहने वाली है जो एक महीने से बीमार चल रही है। इसका जीवन तो मज़दूरी से ही चलता है। बीमारी की वजह से काम पर नहीं गई तो खाने के लिए लाले पड़ गए। जिस दिन मैं गया तो इसकी मां थोड़ा सा आटा मांग कर लाई, उसी में पानी डालकर गर्म करके उसे पिला रही थी। मैंने कहा कि दलिया बनाकर दो ना, पहले वो कुछ बोली नहीं फिर मैंने जोर देकर पूछा कि क्या बात है? तो वो बोली कि घर में कुछ है ही नहीं।

यह हाल हैं हमारे देश के गरीब के। जब मैंने फेसबुक पर डाला और नीरज जी ने पढ़ा तो उन्होंने तुरंत उसके लिए रसोई का सामान खरीदने के लिए हज़ार रुपए मेरे खाते में डाल दिये। दो बार उसके घर गया तो वह अस्पताल गई थी, सामान किसको देकर आता? आज फिर गया तो वो मिल गई, सामान देख कर शायरी बाई बोली कि मेरे भूख के दिन तो टल गए हैं।

मार्च 16

1) उदयलाल जी भील टीबी से पीड़ित हैं, उन्होंने अपना सीना कसकर बांध रखा था। मैंने उनको चित्तौड़ आने की बोलकर आया और साईलिशिया 200 देकर आया।

2) यह गैंदू है, उसे भूत आता है। हुसैन टेकरी जाकर उसको ताले में बंधवाकर आई है।

3) पन्नाभील का परिवार रोटी बनाकर खा रहे हैं, नर्मदा का मकान टूट गया है। वह मुझे अपने घर बुलाकर ले गई और मकान दिखाया।

मार्च 26

यह सब फोटो भील कौम के बारे में खींची हैं मैंने, यह दिखाने के लिए कि इनकी कितनी दुर्दशा है। जहां भी, जिस गांव में भी मैं जाता हूं टीबी के

मरीज मिल जाते हैं। आज गनपतखेड़ा गया तो मैं वहां भगूडी व छोगा के घर गया। मैंने देखा कि उसके घर में मात्र नमक ही है। मेरे से मिलने प्रकाश जी मेघवाल गांव हापाखेड़ी आए, एकदम जवान केवल बाईस साल के हैं और पेशे से इंजीनियर हैं, और मंदसोर कंपनी में जॉब करते हैं। वो बोले कि मेरी तरफ से हज़ार रुपए दे रहा हूं, आपको जो भी गरीब-भूखा-नंगा मिले उसको खाने पीने का सामान दे देना। मैं प्रकाश जी को तहेदिल से बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूं।

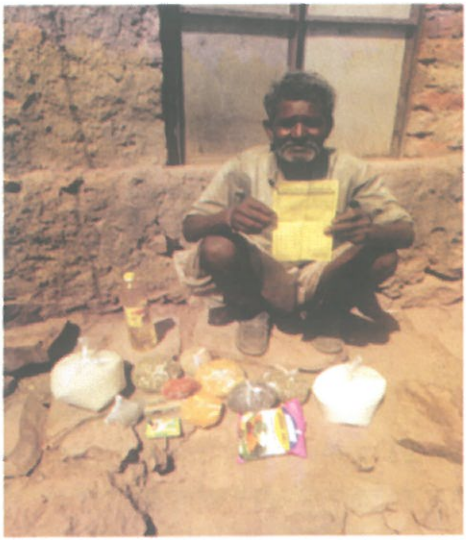

मार्च 27

आज मैं आन्तरी गांव गया, यहां तीन जातियां मुख्य रूप से रहती हैं। भीलों के तीस घर, गुजरों के बाईस घर और राजपूतों के पंद्रह घर। सबसे पहले मैं भेरू के घर गया तो वो मक्का की रोटी खा रहा था, मेथी की आलणी भाजी के साथ। उसकी मां बूढ़ी है जो कहीं से पांच किलो मक्का खरीद लाई थी, बेटा कुछ काम करता नहीं। थोड़ा खिसक गया है, प्रवचन

देता फिरता है। दूसरा फोटो वरदी बाई का है, इनकी पेंशन बंद हो गई थी, वापस चालू करवाकर डायरी वापस दी।

अप्रैल 1

इस औरत के तीन बेटे हैं उनमें से दो साधू बन गए जो इसकी कोई मदद नहीं करते और तीसरा बेटा दारू पीकर चित पड़ा रहता है। मैं बहुत दिनों से इनकी गरीबी के बारे में जानता हूं, ना तो पेंशन मिलती है और सरकार द्वारा पांच किलो गेहूं भी नहीं मिलता। जब प्रकाश जी मेघवाल गांव हापाखेड़ी ने मुझे एक हज़ार रुपए दिया तो मैंने इनको पांच सौ रुपए का सामान दिया। प्रकाश जी को मेरी तरफ से ढेर सारा धन्यवाद अर्पित करता हूं।

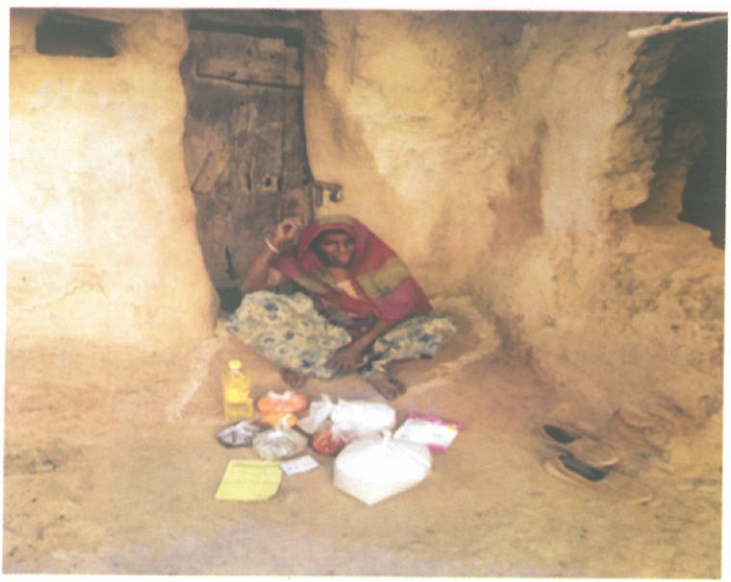

अप्रैल 5

आज भी मैं भेरूखेड़ा गया, शायरी को दो लोग पकड़कर खेत पर ले गए। मैं पूछताछ करते हुए खेत पर गया तो वो खाट पर बैठी मिल गई।

मैं उसे देख कर खुश हो गया कि अब यह नहीं मरेगी। फिर उसके बताया कि सिर भारी रहता है, ऐसा लगता है कि खाली हो गया है। फिर मैं उसे बेलाडोना 200 देकर आया। इसके बाद लदेर में रतनी बाई के घर गया, आज उनकी तबियत नासाज लग रही थी, सर्दी-ज़ुखाम हो गया है। उनको ब्रायो 200 दी।

अप्रैल 8

आज भेरूखेड़ा गांव गया तो शायरी के घर गया, अब उसकी स्थिति काफी बेहतर है। शिकायत कर रही है कि पेट दर्द है थोड़ा-बहुत।

दूसरा फोटो गोपी के परिवार का है। पहले इसके सब बच्चे कुपोषित थे, एक लड़की तो कुपोषण से मर गई थी। जब मैंने इसका फोटो फेसबुक पर डाला तो कई लोगों ने खाने की सामग्री तीन माह तक दी, बाद में मुझे पता चला कि यह अभी गर्भवती है। मैंने राय दी कि ऑपरेशन करवा ले, लेकिन उसने नहीं करवाया तो मैं कहा कि खाने का सामान नहीं मिलेगा। जब भी भेरूखेड़ा जाता हूं तो उसे कहता हूं कि आठ बच्चे हो गए, अब बहुत हुआ लेकिन ऑपरेशन करवा ही नहीं रही है।

अप्रैल 18

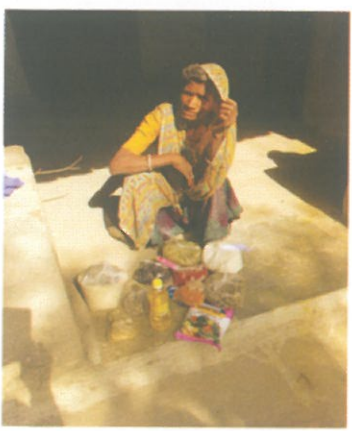

रतनी मेहनजी, गांव अमरपुरा (धीरजी का खेड़ा)। इनके आगे-पीछे कोई नहीं है। अब मज़दूरी भी नहीं होती, ना सरकार से पांच किलो गेहूं मिलता है। रंजना जी, प्रेमजी फाउन्डेशन दिल्ली में काम करती हैं। उन्होंने महीने का खाने-पीने का सामान भेंट किया, जो मैं आज देकर आया।

अप्रैल 18

यह सब एक हज़ार रुपए की खाने की सामग्री गांव भेरूखेड़ा (नाहरगढ़) की शायरी को, नीरज शर्मा जी द्वारा जो निर्धन बेसहारा महिलाओं को भूख से निजात पाने के लिए हर महीने तीन हज़ार रुपये का सामान दिया जाता है उसमें से मैं इनको भी घर देकर आया।

अप्रैल 19

रामेशी प्यार जी भील, गांव नेडिया तहसील भदेसर। इसका पति नहीं है, एक बेटा पागल है और उसके तीन बच्चे हैं। घर में कमाने वाला कोई नहीं। तब मैंने नीरजी जो अलवर के निवासी हैं, और वर्तमान में अमरीका में रहते हैं उन्हें इस बारे में बताया। उन्होंने अपनी बहन जो डिसा में जिला जज हैं को मोटीवेट किया तो वो राजी हो गई और दो हज़ार रुपए की सहायता करने की हां बोली। उसके ही तहत आज नेडिया वाली रामेशी बाई भील को सहायता स्वरूप यह मदद की गई। मैं जज साहिबा का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं।

अप्रैल 22

गनपतखेड़ा पूरा गांव भीलों का है। अब इस गांव मैं मकान ठीक-ठाक हैं। वो सरकार द्वारा बनाए गए हैं। सबसे पहले मैं जहां ढोल बज रहा था, वहीं गया तो सब मुझे बताने लगे, मैंने कहा कि कौन मरा है?

फिर ढोल वाली औरत बताने लगी की गंगोज को सरकार तो नहीं रोकती, इतने में नाराणी भील आ गई। मैंने पूछा क्या हो रहा है? तो बोली कि मेरा बेटा बारह साल का हो गया है, उसकी शादी करी है। मैंने कहा कि बाल विवाह करना मना है। वो बोली कि फिर लड़की नहीं मिलती है। देखो मेरा भाई रतन रह गया है।

फिर मैं दूसरे घर गया, वहां भी शादी हुई थी। वहां से एक लड़की निकल कर आई, इसकी शादी करी है पीपलवास में, वो भी 12 से ज़्यादा की नहीं होगी। भीलों को इतना समझाते हैं, फिर भी समझ में नहीं आती हमारी बात। जब बात करते तो सब हो-हो करते, फिर चुपके से मंदिर पर या देवरे में जाकर कर देते हैं शादी।

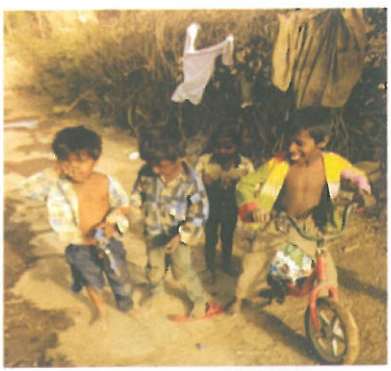

यह रामलाल भील है और मौत का इंतज़ार कर रहा है, इसे सीवीयर टीबी है। यह भील बच्चे टूटी सायकिल पर खेल रहे हैं, शादी होने के बाद दारू पीकर नाच रहे हैं। आजकल रास्तों के नुक्कड़ पर पानी की प्याऊ बिठा रखी है।

अप्रैल 25

लक्ष्मीपुरा गांव का भील परिवार। मैंने इस परिवार से पूछा कि तुमसे ज़्यादा गरीब कौन सा समाज है? तो वो दूसरे समाज को खोजने लगा कि कौन हमारी तरह रहता है। काफी देर सोचने के बाद वो बोले कि हम ही सबसे गरीब हैं।

अप्रैल 27

रामलाल भील, गांव गनपत खेड़ा जो सुखवाड़ा के पास है, वह एक साल से टीबी से पीड़ित है। अब कोई दवाई काम नहीं करती क्योंकि इसने दवाई छोड़ दी थी। पत्नी भी छोड़कर चली गई, कोई औलाद नहीं भी है। भाई सूखी रोटी पकड़ा देता है, यह पूरी तरह से टूट गया है और इसका मकान भी टूट गया है। इस वर्षा में मकान गिर जावेगा और रामलाल भी चला जावेगा।

अप्रैल 28

भील जाती के लोग। गांव में भीलों में कोई शादी हो तो जिस घर में शादी है उस घर को भोजन करने बुलाते हैं, उसे बन्दोला कहते हैं। यह प्रथा सब जातियों में होती है। भील जाती में एक और खासियत होती है कि अगर किसी घर में खाना खत्म हो गया तो पंच यह देख लेते हैं कि कितने लोग हैं और खाना कितना है। उसे ही ये लोग बांटकर खा लेते हैं, आधी बाटी खाकर उफ तक नहीं करेंगे और चुपचाप घर चले जाएंगे।

अप्रैल 29

आज भीलों का खेड़ा गए। यह पीपल का पेड़ है, सब पत्तियां नई आई हैं जो चमकदार रंग की हैं। यह भील महिला है, खाना बना रही है।

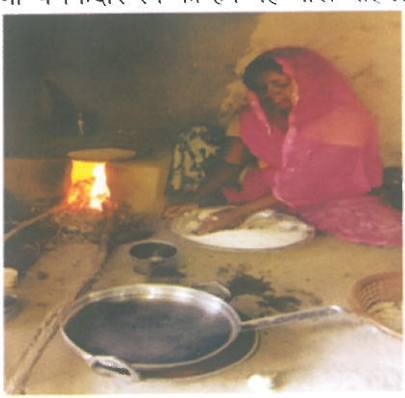

यह तुलसी बाई है, घर के बाहर बैठकर रो रही थी। मैंने पूछा कि क्या बात हो गई जो आप रो रही हैं? तो बोली मेरे बच्चे को बुलाओ, मैंने बुलाया

तो मैंने पूछा तेरी मां क्यूं रो रही है तो मां उबल पड़ी कि मेरा खाने-पीने का सामान नहीं लाता, फिर उसको एक लताड़ लगाई।

मई 7

आज वापस अनाज बांटने का काम शुरू किया, जीप लेकर गए। यह जो बैठी है वो भूरी बाई भील, गांव आंतरी की है। जब हम उसके घर गए तो यह नाहरगढ़ में लकड़ी बेचने गई हुई थी। हम वहीं बैठ गए डेढ़ घंटे इंतज़ार करने के बाद वह आई, मैंने कहा कि बहुत देर से बैठे हैं।

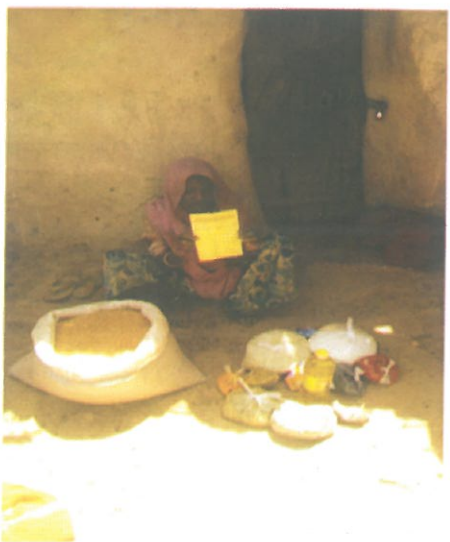

वैसे कहने को तो इसके तीन बेटे हैं, दो तो साधू बन गए और एक दारू पीकर टुन्न रहता है। इसकी कोई मदद नहीं करता, वह लकड़ी बेचकर अपना जीवन चलाती है। एक मूली उसका वजन होगा 23 किलो, नहारगढ़ में बेचकर बीस रुपए मिलता है उसी से खाने का सामान लेकर आती है। खाद्य सुरक्षा में पांच किलो अनाज भी नहीं मिलता है। इनके खाने पीने का जिम्मा नीना वर्मा जी (दिल्ली वाली) ने उठाया। उनकी तरफ से हज़ार रुपए की समाग्री प्रदान की गई, उनका तहेदिल से धन्यवाद अर्पित करता हूं।

मई 7

हुडी बाई भील, गांव भालुन्डी की है। इनकी उम्र सत्तर के करीब है, इनका एक बेटा है सिन्गा जो 15 साल से जेल में बंद है। इनके पास ना खेती की ज़मीन, ना ही गाय,मुर्गी,बकरी। एक घर के नाम पर टपरी (झोपड़ी) मात्र है। इनकी खाने की सामग्री का जिम्मा पंजाब में काम करने वाले अनू

भाई जो मूलतः बिहार के रहने वाले हैं, ने लिया है। उनकी तरफ से एक हज़ार रुपए का सहयोग दिया गया, मैं उनको बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूं।

मई 7

डालचन्दभील गांव गांगागूड़ा, कुछ काम नहीं करता दारू पीकर टुन्न पड़ा रहता है। बेचारी औरत मज़दूरी करके लाती है। इनके खाने की पुरे महीने की सामग्री नीना जी (दिल्ली वाली) की तरफ दी गई।

मई 7

प्यारी बाई, जटिया चमार गांव मंगरी अगोरिया। इनको पूरे महीने का खाने का सामान अर्पिता जी की तरफ से दिया गया, मेरी ओर से ढेर सारी बधाई।

मई 8

घीसी/गोपी, गांव अमरपुरा को पूरे महीने का खाने पीने का सामान नीना जी की तरफ भेंट किया गया। मैं अपनी ओर से बहुत धन्यवाद देता हूं, अब एक और को दे देना है, वो घर में नहीं मिल रही है, तीन चक्कर लगा दिये हैं।

मई 11

मोडी खेड़ा में मीटींग करने गए तो पता चला कि चार परिवारों को पांच किलो अनाज नहीं मिलता है। एक लेहरी बाई ने कहा कि मेरे को खाने-पीने

की दिक्कत होती है। मैंने पूछा बेटा है या नहीं? तो बोली चार बेटे हैं, तो मैंने कहा वो क्यूं नहीं देते हैं? मैं दिलाता हूं, केस कर देते हैं, फिर बोली केस नहीं करना है। तो मैंने कहा सरकार से लेना चाहती हो?

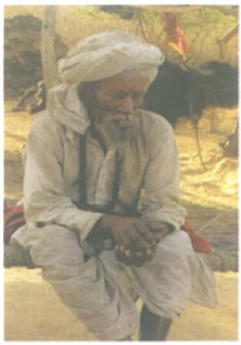

यह वृद्ध आदमी गांव की भेड़ चराता है। इसके आस-पास औलाद नहीं है।

मई 12

यह मंगनी बाई भील गांव अचलपुरा की है। इनके एक बेटा है, जो ब्यावर में जाटों के यहां बंधुआ मज़दूरी करता है। जब मैं इनके घर गया तो सब बर्तन खाली पड़े थे, पड़ोसियों ने बोला कि आधी बार भूखी सोती है। अलबत्ता पेन्शन मिलती है और पांच किलो गेहूं भी मिलता है, पर फिर भी भयंकर दरिद्रता का जीवन बिता रही है।

मुझे लगता है कि अब इनको टीबी का अटैक हो रहा है, मैं अभी दवाई देकर आऊंगा खांसी की। जितनी गरीबी और भुखमरी भील जाती में है, उतनी किसी और कौम में नहीं है। पांच महिलाओं के वास्ते इन सब सामग्री के लिए नीना जी (दिल्ली वाली) की तरफ रुपए दिए गए। मैं नीनाजी का तहे दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

इस अनाज व खाद्य समाग्री को देने के लिए कल मोडीखेड़ा गया तो शाणी बाई पंचायत मेम्बर ने मेरे उपर दो नाम की सिफारिश करी कि इन दोनों को देना पड़ेगा। एक

घर के अंदर जाकर देखा तो बर्तन व भेड़ें बंधी हुई थी, दूसरे के घर में सौ किलो अनाज पड़ा हुआ था।

मई 13

शोभालाल भील, गांव जावद मध्य प्रदेश का है। वह बता रहा था कि वहां पर कोई मज़दूरी नहीं थी। 34 साल पहले भदेसर के एक गांव मंगरी का अगोरिया में आकर रहने लग गया। तीस साल तक तो मास्टर साहब के खेत में काम किया, इन दिनों निम्बाहेड के खटीक साब के खेत में काम करता है।

चार महीने पहले वह जंगल में धावडा का गोंद तोड़ने गया था, वह डाली पर चढ़ा तो वो डाली टूट गई, वह नीचे गिर गया तो पांव की हड्डी टूटकर बाहर निकल गई। बेचारा पहले से विकलांग था, जो साबुत पांव था, वो भी टूट गया। अब भूखे मरने की नौबत आ गई, इसलिए 13 साल के बच्चे टेंट वाले के यहां काम पे रखा दिया।

मई 13

भूरी शोभालाल भील, गांव मंगरी अगोरिया का है। उनके पास ना बकरी, ना मुर्गी, ना ज़मीन, लोगों के खेतों में काम करके जीवन चला रहे थे। चार महीने पहले गोंद तोड़ने पेड़ पर चढा और डाली टूटने पर नीचे गिर गया तो हड्डी टूट गई। अब इसके परिवार के भूखे मरने के दिन आ गए हैं। विशाल जी जो एनएसडी में ड्रामा की पढ़ाई कर रहे हैं, उनके द्वारा इस परिवार के एक साल के राशन-पानी की ज़िम्मेदारी ली गई है।

मई 16

आज से बीस साल पहले जब हम भदेसर में रहने आए तो गन्टेडी, गांगागुडा, केसरपुरा, गनपतखेड़ा, मोडीखेड़ा, पारलिया, भीलबस्ती, भीलकट्टी, हटीपुरा और कई अन्य गांव जिनका नाम लिखना मुनासिब नहीं लगता है, इनके घरों की हालत इतनी दयनीय थी कि वर्णन नहीं कर सकते हैं।

आधे से ज़्यादा लोग भरपेट भोजन नहीं कर पाते थे, कपड़े-बिस्तर इत्यादी का भंयकर अभाव था। गांव में खेतीहर जातियों के मकान पक्के थे, बाकी सारे मकान कच्चे गोबर से लीप रखे थे। लेकिन आज परिदृश्य बदल चुका है, जैसे सूतारीखेड़ा में 90% मकान प्रधानमंत्री योजना के तहत पक्के बन गए हैं या बन रहे हैं। लेकिन 25% लोगों में अभी भी भुखमरी व्याप्त है, वो भी खासकर भीलों में। गरीब लोग काम करना चाहते हैं मनरेगा में, लेकिन सहायक सचिव काम शुरू करने में कोई खास रुचि नहीं लेता।

मई 17

कल शाम को मोडीखेड़ा गए, वहां भेरू चेना भील का घर जलकर खाक हो गया। जो तनपर कपड़े पहनकर सोए वही बचा और कुछ नहीं बचा। बेचारे रो रहे थे, हमें गोपाल जी ने पांच सौ रुपए दिए थे, 13 तारीख को उन रूपयों का खाने-पीने का सामान देकर आए।

दूसरा फोटो मोतीबा भील का है, इनकी औरत इन्हें छोड़कर चली, अब कोई आस नहीं है। इनकी भी औलाद नहीं है और उम्र भी 77 के करीब पहुंच गई है। उनको भी 550 रुपए का सामान देकर आए, इनकी मदद की है निम्बाहेडा की वर्षा कृपलानी जी ने। मैं गोपाल जी व कृपलानी जी दोनों को तहेदिल से धन्यवाद अर्पित करता हूं।

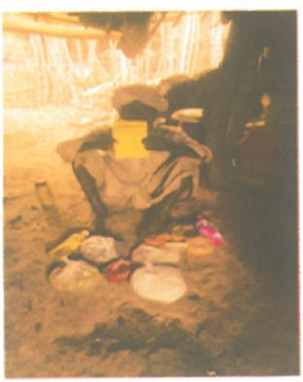

मई 18

अणसी बाई भील, गांव हट्टीपुरा की हैं, वह बहुत दिन से बीमार हैं। मैंने इनकी फोटो फेसबुक पर डाली तो बहुत साथियों ने कहा कि इनको कोई ज़रूरत हो तो बताना। मुझे लगा कि वह ज़्यादा दिन की मेहमान नहीं है, तब वह उठ भी नहीं सकती थी। इनकी तबीयत थोड़ी ठीक होने पर वह मुझे रोज़ खबर भेजने लगी कि मेरी फोटो खीचकर ले गए पर मुझे दिया कुछ नहीं।

निम्बाहेडा की वर्षा कृपलानी जी ने ग्यारह सौ रुपए दिए तो उन रूपयों से 550 की दो पोटली खरीदकर कल मोतीबा भील गांव मोडीखेड़ा को और दूसरी मदद अणसी बाई को आज गांव में जाकर दी। मैं इन दोनों की मदद करने के लिए वर्षा जी को बहुत धन्यवाद देता हूं।

मई 20

यह रतनी है, गांव लदेर। इनके पति केलाजी भील दस साल पहले मर चुके हैं और इनको टीबी हो गया है। मैं इनके घर गया तो खाने का कुछ भी सामान नहीं था। दवा तो चालू करवा दी पर असर नहीं कर रही थी।

मैंने टीचर से बात की और कहा कि खाने को दे देना मीड डे वाला खाना। उसने

कहा कि ज़रूर दे दूंगा, पर दिया नहीं। बेचारी भूख से बिलखती आंगनबाड़ी के पास गई तो उसे कहा गया कि हमारे पास कोई नियम नहीं है।

क्या करता? मैंने घर से दस किलो अनाज ले जाकर उन्हें दिया, पर उससे कुछ काम नहीं चलता। टीबी वाले को थोड़ा-बहुत अच्छा खाना चाहिए। यह सब फेसबुक पर पढ़कर नीरज शर्मा जी का दिल पिघला और बोले मेरी तरफ से आप उनको बेलेंस डाईट खरीदकर दे दो। मेरे सामान मुहैय्या करवाने के बाद से उनकी हालत में सुधार आ गया। वह अब चल फिर सकती है और घर का काम भी वो ही करती है।

मई 20

कल और आज अनाज व खाद्य समाग्री बांटने का काम किया। कुल पांच भील महिलाओं को उनके घर जाकर सामान दिया। शायरी के घर में तो कुछ खाने का सामान था भी नहीं, बस मेरा ही इंतज़ार कर रही थी। जब इनको सामान देने जाते तो कैसे राम-राम करती हैं, जो मुझे बहुत बुरा लगता है।

मई 26

आज भीलों की पंचायत में गया, जो रंगीन दरी पर बैठे हैं वे पंच सोनरडा के हैं और साथ में बारह गांवों के और लोग पंचायती करने आए

हैं। कारण यह था भीलों का खेड़ा की एक लड़की चौपाखेड़ी के लड़के साथ रहने चली गई। लड़की पढ़ने में फस्ट डिविजन लेकर आती है।

इस लड़की की शादी बचपन में कर दी थी, एक भी दिन ससुराल नहीं गई। फिर एक दिन सोनरडा वाले लेने गए तो लड़की ने सोचा कि अब तो जाना पड़ेगा। घर से यह कहकर निकली कि मेरे कपड़े दर्जी के यहां पड़े

हैं, वो लेकर आती हूं और अपने बाप के मोबाइल से सिम कार्ड निकालकर चूल्हे में डाल गई। फिर दो घंटे तक वापस घर नहीं आई तो उसके पिताजी हमारे पास दौड़कर आए कि मेरी लड़की किसी लड़के साथ चली गई है। हमने कहा कि लड़की अभी 17 साल की है, लड़के का दिमाग ठीक कर देंगे। फिर आधार कार्ड मंगवा कर देखा तो वो 18 साल की निकली।

आज उसी का झगडा तोड़ने पंचायती हुई, मुझे भी बुलाया गया। दोनों गांवों के लोग दो सौ मीटर की दूरी पर बैठ गए, फिर एक कोतवाल होता जो इधर की बात उधर कहता। सबसे पहले सोनरडा का कोतवाल जाता है। चौपाखेड़ी वालों के पास की हमारी मांग तीन लाख रुपए, फिर चापॉखेडी का कोतवाल जाकर कहता है कि हम तो चालीस हज़ार देंगे, आखिर 5 बजे तक झगड़ा नहीं टूटा, फिर मैं घर आ गया।

मई 28

अब जहां भी कैंप लगेगा, वरदी बाई के आंखों का ऑपरेशन करवाना है। वह गांव भेरूखेड़ा नाहरगढ़ की रहने वाली हैं। शायरी भी उसी गांव की है, चार महीने से बीमार थी। घर में खाने का एक दाना नहीं था, नीरज शर्मा जी ने उसकी आर्थिक मदद करके उसे जीवनदान दिया है।

मई 28

भगूडी छोगा भील, गांव गनपतखेड़ा की है। यह जो खाने की सामग्री दी है, पहले यह सामान धामनीखेड़ा के हूडी मगना को दी और इनके पड़ोसी के घर रख आए। वह बाईस दिन से लापता है तो सामान लेने गए लेकिन पड़ोसी ने देने से इंकार कर दिया कि सामान मैं ही रखूंगा। हमने कहा कि क्यूं रखेगा? कहने लगा कि सरकार ने दिया है।

गनपतखेड़ा पूरा भीलों का गांव है और लोग यहां बहुत निर्धनता का जीवन बिता रहे हैं। इस सामान के रुपए नीना जी (दिल्ली वाली) की तरफ दिया गया है, मैं उनको धन्यवाद देता हूं।

मई 29

यह हगामी बाई गांव ब्यावर की है, इनके पास कमाई का कोई भी साधन नहीं है। घर में कुछ खाने का सामान भी नहीं है। इनके एक बेटा और एक बेटी है, बेटे ने सब ज़मीन बेच दी है। हगामी बहुत सीधी है, कोई भी काम पर बुलाता तो सिर्फ रोटी खिला देता।

कल जब मैं सामान देने गया तो लोगों ने बताया कि पहले जो सामान दिया था, वो इनकी बेटी लेकर चली गई।

पड़ोसी औरतों ने कहा कि यह सामान दे रहे हैं, इसे अपनी बेटी को मत देना। फिर मैंने भी कहा कि सामान तुम्हें दे रहे हैं, आप ही खाना, तो कुछ बोली नहीं। मुझे लगा कि मंद बुद्धि की वजह से इसे डर है कि मेरा सामान कोई लेकर चला जाएगा, फिर मैंने सामान नहीं दिया और आ गया।

जून 1

आज केसरपुरा व नला के सब गांवों में गया, जिनकी खाने में मदद करी। पहली प्यारी बाई, अगोरिया गांव से और शोभालाल भील भी अगोरिया का ही है। रेबारियो की ढाणी के बीजल जी टीबी मरीज हैं, उन्हें समझाया कि दवा एक दिन भी मत छोड़ना।

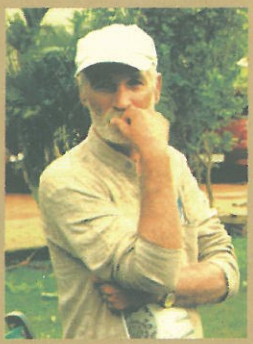

खेमराज ने क्रांति का पाठ किताबों से नहीं, अपने संघर्षमय जीवन से सीखा। बचपन बेहद गरीबी में बीतने के बावजूद किसी तरह स्नातक तक पढ़ाई कर ली। इसीलिये इन्होंने शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के साथ-साथ मानवीयता से प्रेरित होकर गरीब लोगों के कष्ट दूर करने के लिये राहत के कामों को भी पूरे मन से किया।

SRUTI
Society for Rural, Urban and Tribal Initiative